अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

वर्ष : 55 ■ अंक 1 ■ 1-15 नवंबर, 2009

❑ अनैतिकता की प्रतिरोधक शक्ति है अणुव्रत	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
❑ आदमी के साये हैं आदमी नहीं	*अणुव्रत डेस्क*	5
❑ 60वां अणुव्रत अधिवेशन सम्पन्न	*अणुव्रत डेस्क*	7
❑ सम्मान समारोह	*अणुव्रत डेस्क*	11
❑ योगक्षेमी विसर्जन योजना	*अणुव्रत डेस्क*	12
❑ अणुव्रत महासमिति के बढ़ते कदम	*अणुव्रत डेस्क*	13
❑ अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान	*अणुव्रत डेस्क*	19
❑ अणुव्रत आंदोलन का 61वां स्थापना दिवस	*अणुव्रत डेस्क*	27
❑ अणुव्रत महासमिति वेबसाइट	*अणुव्रत डेस्क*	28
❑ नशाखोरी हराम, स्मोकिंग पर फतवा	*अणुव्रत डेस्क*	29
❑ अणुव्रत समिति बोरड़ा, टिटिलागढ़	*अणुव्रत डेस्क*	30
❑ अणुव्रत समिति मरोली, बाड़मेर	*अणुव्रत डेस्क*	31
❑ अणुव्रत समिति छापर	*अणुव्रत डेस्क*	32

♦ संपादक ♦
डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

■ *सदस्यता शुल्क :*

- **एक प्रति :** बारह रु.
- **वार्षिक :** 300 रु.
- **त्रैवार्षिक :** 700 रु.
- **दस वर्षीय :** 2000 रु.

■ *विज्ञापन सहयोग:*

- **मुख पृष्ठ रंगीन 4 :** 10,000 रु.
- **मुखपृष्ठ रंगीन 2-3 :** 8,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ पूरा :** 3,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ आधा :** 2,000 रु.

■ *शुल्क भेजने का पता :*

अणुव्रत महासमिति, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 (भारत)

- **फोन:** 23233345, 23239963
- **फैक्स:** (011) 23239963
- **E-mail :** anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
- **Website :** anuvratinfo.org

■ स्तंभ

❑ संपादकीय	2
❑ राष्ट्र चिंतन	6
❑ झाँकी है हिन्दुस्तान की	29
❑ अणुव्रत आंदोलन	33-40

अणुव्रत अधिवेशन का आह्वान

अणुव्रत आंदोलन ने छः दशकों की परिपूर्णता के बाद सातवें दशक में कदम रखा है। कोई भी नैतिकतामूलक आंदोलन साठ वर्षों तक अबाध गति से चलता रहे यह स्वयं में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इतिहास गवाह है कि कोई भी आंदोलन अधिक समय तक जीवित नहीं रहा। कुछ वर्षों की निरंतरता के बाद कोई भी आंदोलन अपनी चमक खो बैठता है, लेकिन अणुव्रत आंदोलन साठ वर्षों के उपरांत भी आज प्रासंगिक है और हमारा दिशा दर्शन कर रहा है, क्योंकि यह शाश्वत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है।

अणुव्रत आंदोलन के साठवें वार्षिक अधिवेशन में अणुव्रत समाज को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का यह कथन हमारे भविष्य को रेखांकित करता है अनैतिकता की समस्या अतीत में थी, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगी। अणुव्रत का कार्य तो चल रहा है पर उसका वेग कम हो गया है। सातवें दशक में अणुव्रत के कार्य में पुनः तीव्रता लानी है और अणुव्रती कार्यकर्ताओं को अनैतिकता के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोधात्मक शक्ति के रूप में खड़ा होना है। क्योंकि अणुव्रत का काम है प्रतिरोधक शक्ति के रूप में उपस्थित रहना।

अणुव्रत अनुशास्ता के उक्त उद्‌बोधन के संदर्भ में अधिवेशन में सर्वसम्मत निर्णय हुआ है कि आगामी वर्ष में अणुव्रत समितियां एवं कार्यकर्ता अणुव्रती बनो अभियान को गति देते हुए हजारों-हजारों व्यक्तियों को अणुव्रत अभियान से जोड़ने के साथ ही सार्वजनिक एवं संघीय संस्थाओं की सहभागिता से आने वाले वर्षों में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान, नशामुक्ति अभियान, चुनावशुद्धि अभियान एवं आडंबर विरोधी अभियान के स्वर को मुखर करेंगे।

अणुव्रत अधिवेशन का उक्त निर्णय स्वागत योग्य है। आज चहुंओर हाहाकार है। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचारतंत्र और शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडंबर में लिप्त है। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडंबर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे बैठे हैं। हां, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अनैतिकता के मूल में है गरीबी, भूख। व्यक्ति भूखा रहता है तब अनैतिकता का जन्म होता है, भ्रष्टाचार को पंख लगते हैं और अर्थ प्राप्ति की ललक व्यक्ति से मानवीय मूल्यों को छीन लेती है। जब एक पिता, एक भाई अर्थ के अभाव में बेटे-बेटियों, भाई-बहिनों को पढ़ा नहीं सकता, दहेज के अभाव में उनका विवाह नहीं कर सकता तथा पति अपनी पत्नी को भरपेट भोजन और घर का सुख भी नहीं जुटा सकता तब वह अपराध बोध से ग्रस्त होता है। और यहीं से प्रारंभ होती है भ्रष्टाचाररूपी गंगा, जिसमें आज पूरा देश नहा रहा है।

अणुव्रत ने इन बुराइयों पर अंगुली उठाई है यह महत्वपूर्ण है। मैं जानता हूं कि हमारे साधन-शक्ति सीमित हैं, लेकिन साठ वर्षों का अनुभव- इतिहास हमारे सामने है, जो हमारा पथदर्शन कर रहे हैं और उसी के सहारे अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो रही है। **अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का यह कथन अति महत्वपूर्ण है अणुव्रती कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया जाने वाला भ्रष्टाचार-आडंबर-नशामुक्ति अभियान दीपक के समान तुल्य है। पर यह प्रकाश भी सार्थक होगा क्योंकि इससे अनैतिकता, भ्रष्टाचार, नशे का अंधकार और गहरा नहीं हो सकेगा।**

◆ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

अणुव्रत अधिवेशन को संबोधित करते हुए डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अनैतिकता की प्रतिरोधक शक्ति है अणुव्रत

• आचार्य महाप्रज्ञ •

सातवें दशक में अणुव्रत के कार्य में पुनः तीव्रता लानी है उसे लिफ्ट देना है। अणुव्रत का काम है प्रतिरोधक शक्ति के रूप में उपस्थित रहना। समाज में होने वाली बुराइयों के विरुद्ध प्रतिरोधक शक्ति है अणुव्रत। अणुव्रती कार्यकर्ताओं को अब पुनः बुराइयों के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोधात्मक शक्ति के रूप में खड़ा होना है यह नया दृष्टिकोण बने कार्यकर्ताओं का।

आज 2 अक्टूबर का दिन और अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस। हम लोग बहुत चतुर हैं। हमारी व्यावसायिक दृष्टि सभी तरफ काम कर रही है। एक दिन अहिंसा दिवस मना लो और फिर 364 दिन हिंसा ही हिंसा। यह बहुत विचित्र लग रहा है। अहिंसा दिवस आयोजना के साथ जो कार्यक्रम होना चाहिये वह हमारे पास नहीं है! अहिंसा दिवस का कार्यक्रम क्या हो, उसकी अवधि क्या हो इसका उत्तर मैं अणुव्रत अधिवेशन में खोज रहा हूं। अच्छा संयोग मिला है अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस और अणुव्रत अधिवेशन। अहिंसा दिवस मनाने वाले इसके साथ अणुव्रत जोड़ देते तो कार्यक्रम पूरा हो जाता।

महात्मा गांधी द्वारा निर्दिष्ट अहिंसा का प्रयोग राजनीतिज्ञ यदि राजनीति के क्षेत्र में करते तो अहिंसा दिवस मनाना सार्थक होता। महात्मा गांधी में अनूठा संयम था। यदि आज हम उस मार्ग पर चलते तो देश का चित्र दूसरा ही होता।

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत के प्रथम नियम "मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।" को विश्वव्यापी बनाया जाये, तो स्थितियों में बदलाव आ सकता है और अनावश्यक हिंसा को रोका जा सकता है। वर्तमान में समाज की स्थितियां भी विचित्र हैं, समाज पीड़ित है और हम अच्छे आदमी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। समाज में हिंसा है, गरीबी है, व्यभिचार है, कुप्रथाएं हैं, आडंबर है, धन का बोलबाला है, बेईमानी है और हम चाहते हैं कि राजनेता अच्छा हो, अधिकारी ईमानदार हो। पहले सामाजिक स्थितियों को बदलो तब व्यक्ति अच्छा बनेगा।

नैतिकता के बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती और अहिंसा के बिना नैतिकता प्रतिष्ठापित नहीं हो सकती। अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है। महात्मा गांधी ने राजनीति के क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग किया था और आचार्य तुलसी ने सामाजिक क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग किया। अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस की पूरी कार्ययोजना हो तथा अहिंसा दिवस के साथ अणुव्रत का समन्वय हो जाये तो अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाना सार्थक हो जायेगा।

2 अक्टूबर, 2009

मेरी दृष्टि में उस व्यक्ति का बहुत मूल्य है जो सत्य की खोज करता है। जो व्यक्ति खिंची हुई लकीर को देखता है और

उसी पर चलता है वह आदमी तो होता है पर सत्य की खोज करने वाला नहीं होता। सत्य दो प्रकार के होते हैं सामयिक सत्य और शाश्वत सत्य। शाश्वत का मूल्य होता है वह त्रैकालिक होता है। त्रैकालिक सत्य है अणुव्रत जो समाज के लिए कल्याणकारी है।

अनैतिकता की समस्या अतीत में थी, आज भी है और भविष्य में भी रहेगी। अनैतिकता से समाज स्वस्थ समाज नहीं बन पाता। हर व्यक्ति के मन में नैतिकता और अनैतिकता का द्वन्द्व बना रहता है। जहां एक से दो होते हैं वहां नैतिकता की आवश्यकता होती है, नैतिकता का जन्म होता है। अतः हमें दो की मर्यादा को समझना होगा।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी शाश्वत सत्य की खोज करने वाले आचार्य थे। आजादी के बाद भौतिक विकास के साथ यदि नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा तो स्वतंत्र भारत का विकास लंगड़ापन लिये होगा ऐसा आचार्य तुलसी की सोच थी। इसीलिये उन्होंने युग के अनुरूप अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। आज आर्थिक-भौतिक विकास तो बहुत हुआ है, एक पांव मजबूत हुआ है लेकिन व्यापक भ्रष्टाचार-अनैतिकता के कारण हमारा दूसरा पांव लड़खड़ा गया है और हमारे देश का नाम भ्रष्टाचार वाले देशों की सूची में अग्रिम पंक्ति पर है।

देश में पनप रही अनैतिकता को ध्यान में रखते हुए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का कार्य प्रारंभ किया। वर्तमान में भी अणुव्रत का कार्य तो चल रहा है पर उसका वेग कम हो गया है। सातवें दशक में अणुव्रत के कार्य में पुनः तीव्रता लानी है उसे ऊपर उठाना है। अणुव्रत का काम है प्रतिरोधक शक्ति के रूप में उपस्थित रहना। समाज में होने वाली बुराइयों के विरुद्ध प्रतिरोधक शक्ति है अणुव्रत। अणुव्रती कार्यकर्ताओं को अब पुनः बुराइयों के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोधात्मक शक्ति के रूप में खड़ा होना है यह नया दृष्टिकोण बने कार्यकर्ताओं का।

3 अक्टूबर 2009

अणुव्रत का 60 वां अधिवेशन चल रहा है। आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत की यात्रा करके दक्षिण भारत को अणुव्रतमय बनाया था। समय के साथ दक्षिण में अणुव्रत का स्वर कुछ मंद हुआ है। अणुव्रत महासमिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष दक्षिण भारत के हैं। निर्मल रांका के नेतृत्व में दक्षिण भारत में अणुव्रत का स्वर तेजी से बुलंद होगा और दक्षिण भारत एक बार पुनः अणुव्रत की गतिविधियों का केन्द्र बनेगा।

निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट को अणुव्रत विरासत में मिला है। उसने खूब काम किया, बहुत यात्राएं की, कार्यकर्ताओं को जोड़ा और संगठन को सुदृढ़ बनाया तथा स्वयंसेवी संस्थाओं से व्यापक सम्पर्क साधा। महेन्द्र और निर्मल दो होते हुए भी एक हैं। देवेन्द्र का उत्तराधिकारी महेन्द्र और मोतीलाल का उत्तराधिकारी निर्मल। महेन्द्र का दायित्व निर्मल पर आया है। दोनों मिल कर अणुव्रत का खूब काम करें। अध्यक्ष और पदाधिकारी बदलते रहते हैं पर अणुव्रत महासमिति की चिंता करने वाले, सार संभाल करने वाले, नया चिंतन करने वाले नहीं बदलते। इस दृष्टि से अब एक नई परम्परा बने और निवर्तमान अध्यक्ष अणुव्रत महासमिति के स्थायी संरक्षक बन अपनी इस भूमिका का दायित्व निर्वहन करें।

अणुव्रत अधिवेशन के अवसर पर मैं कार्यकर्ताओं को याद करना चाहता हूं। विजयराज सुराणा दिल्ली, प्रेमसिंह तलेसरा भीलवाड़ा, नौरतमल कांठेड़ आसीन्द, डालचंद चिंडालिया सरदारशहर, अनिल रांका सूरतगढ़, मीठालाल भोगर सूरत, नंदलाल नाहर मेहकर, ओम बांठिया बालोतरा, सिद्धेश्वर प्रसाद पटना, हंसराज बैंगानी लाडनूं और पूनमचंद दूगड़ लाडनूं को अणुव्रत सेवी से संबोधित करता हूं।

4 अक्टूबर 2009

उद्‌बोधन एवं अंतरंग गोष्ठी के अंश

अणुव्रत अधिवेशन में बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल अणुव्रत अनुशास्ता से आशीर्वाद लेते हुए। साथ में अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा

आदमी के साये हैं आदमी नहीं

अणुव्रत अधिवेशन के स्वर

अणुव्रत अधिवेशन चल रहा है। विगत रात्रि को मैं कार्यकर्ताओं के मध्य में था। कार्यकर्ताओं द्वारा किये गये कार्यों को जानने का अवसर मिला है। कार्यकर्ताओं के कार्यों का अंकन होना चाहिए तो उन्हें जो कठिनाइयां आ रही हैं उन्हें भी दूर करने का प्रयास होना चाहिये।

अणुव्रत की वर्तमान स्थिति से आचार्यप्रवर संतुष्ट नहीं है। इस असंतोष के पीछे क्या कारण है? कारणों को जानने के बाद उसके समाधान का प्रयास हो। असंतोष शब्द के पीछे मेरा विचार है जितना कार्य होना चाहिये था वह नहीं हुआ, हो रहा है इसलिये असंतोष है।

अणुव्रत का प्रतिवर्ष का कार्यक्रम पूर्व निर्धारित हो तथा एक-दो कार्यों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाये। अणुव्रत की संस्थाओं का भी कार्य विभाजन होना चाहिये। तेरापंथ समाज की बड़ी शक्ति अणुव्रत के विकास में लग रही है। अणुव्रत व्यापक है। नास्तिक लोगों के लिए भी यह कल्याणकारी है। अणुव्रत हमें समस्याओं से उबार सकता है।

3 अक्टूबर 2009 **युवाचार्य महाश्रमण**

गांधी दर्शन और अणुव्रत दर्शन आज के विश्व की अपेक्षा है। दोनों ही दर्शनों ने मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाई है। अच्छा जीवन जीने की दृष्टि से आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन किया और धर्म को संकीर्णता के घेरे से बाहर निकाला। आचार्य तुलसी ने धर्म को सम्प्रदायवाद के कटघरे से निकाल कर अणुव्रत के रूप में मानस धर्म की प्रतिष्ठापना की। आज अणुव्रत लोगों को राहत दे रहा है। हम अणुव्रत दर्शन को समझें और उसे जीवन में उतारें। अणुव्रत की चर्चा नैतिकता की चर्चा है।

2 अक्टूबर 2009 **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

आचार्य तुलसी भविष्यद्रष्टा थे। नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना में उन्होंने अपनी

सारी शक्ति झोंक दी। ब्रह्मांड की उत्पत्ति प्रोटोन, इलेक्ट्रॉन एवं न्यूट्रॉन जैसे सूक्ष्म तत्वों से हुई है। अणुव्रत आंदोलन छोटे-छोटे संकल्पों से युक्त है पर इसके सहारे देश में जन-जागरण का महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। आज वैचारिक- सांस्कृतिक प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ा है। इसे रोकना ही होगा। संतपुरुषों का काम विचार देना होता है हम उसे स्वीकारें या नहीं यह स्वयं पर निर्भर है। आज आदमी के साये तो हैं पर आदमी नहीं है। अतः हम स्वयं को बदलें और फिर समाज को बदलने का प्रयास करें तभी सही मनुष्य का अवतरण होगा।

2 अक्टूबर 2009 **मीठालाल मेहता**

पूर्व मुख्य सचिव : राजस्थान राज्य

मेरे जीवन को अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों ने बहुत प्रभावित किया है। मैं आज भी अणुव्रतों के प्रति जागरूक रहता हूं। अणुव्रतों को अपना कर हम चरित्रवान बन सकते हैं। चरित्रसम्पन्न नागरिकों के सहारे ही राष्ट्र विकसित देशों की सूची में प्रथम पंक्ति में पहुंच पायेगा।

2 अक्टूबर 2009 **अर्जुन मेघवाल**

सांसद : बीकानेर

जो चुनौतियां हमारे सामने हैं, उनका मुकाबला करने में अणुव्रत सक्षम है। मानव जाति को बेहतर बनाने के लिए अणुव्रत से अच्छा अन्य कोई दर्शन नहीं हो सकता। हिंसा हमारे लिए सदियों से चुनौती रही है और अहिंसा इसके सामने दीवार बन खड़ी है। अहिंसा को कैसे व्यापकता मिले और वह हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बने इस पर प्रमुखता से विचार होना चाहिये।

3 अक्टूबर 2009 **डॉ. सोहनलाल गांधी**

अध्यक्ष : अणुविभा

शाश्वत मूल्यों की अपेक्षा तीनों कालों में महसूस की जाती रही है। अणुव्रत शाश्वत है। अणुव्रत ने मनुष्य जाति को सूत्र में बांधने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। अणुव्रत के माध्यम से सभी जाति-धर्म-सम्प्रदाय के लोग हमारे से जुड़े है।

3 अक्टूबर 2009 **साध्वी विश्रुतविभा**

मुख्य नियोजिका

अणुव्रत के कार्य को गति देने के लिए आवश्यक है जीवन दानी कार्यकर्ता। ऐसे कार्यकर्ताओं का निर्माण करके ही हम हमारे लक्ष्य को पा सकेंगे।

4 अक्टूबर 2009 **धनराज बोथरा**

प्रबंध न्यासी : अ.भा. अणुव्रत न्यास

राष्ट्र चिन्तन

◆ रबी की अच्छी फसल की उम्मीद है और महंगाई का सबसे खराब दौर बीत चुका है। अक्टूबर-फरवरी में रबी की फसल का महंगाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अब तक यह लगने लगा है कि कीमतों के मामले में सबसे बुरा दौर बीत चुका है। सूखे जैसे चंद विशिष्ट कारणों की वजह से कुछ चीजों के दाम जरूर बढ़े हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि रबी की फसल सामान्य होगी और इसका प्रभाव महंगाई पर पड़ेगा। कृषि ऋण माफी जैसे तात्कालिक उपायों के बजाय सरकार ज्यादा अर्थपूर्ण उपायों पर विचार करेगी।

डॉ. मनमोहन सिंह

प्रधानमंत्री

◆ एकल महिलाएं अनेक दृष्टि से सामाजिक तौर पर अलाभकारी स्थिति में हैं। जो महिलाएं यौन उत्पीड़न की शिकार होती हैं, उनमें 33 प्रतिशत विधवाएं हैं। आयोग एकल महिलाओं के लिए विशेष योजनाएं और कार्यक्रम लागू करने और उन्हें रोजगार दिलाने के बारे में सरकार से पैरवी कर रहा है। आयोग यह सुनिश्चित करना चाहता है कि अपने अभिभावकों और सास-ससुर की संपत्ति में से महिलाएं अपना हिस्सा प्राप्त करें। वह महिलाओं के अधिकारों और समीक्षा तथा उसके कानून के विस्तार के प्रति प्रतिबद्ध है।

डॉ. गिरिजा व्यास,

अध्यक्ष : राष्ट्रीय महिला आयोग

◆ दूसरे देशों को दिखाने के लिए राष्ट्र मंडल खेलों के आयोजन पर सरकार अरबों रुपयों की जो धन राशि खर्च कर रही है वह फिजूलखर्ची नहीं है बल्कि एक पाप है। भारत जैसे गरीब देश में जहां आधी आबादी के पास रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी चीजें नहीं हैं। यहां सरकार सिर्फ 10-15 दिनों के खेलों को आयोजित कराने पर अरबों रुपया पानी की तरह बहा रही है। अगर इस धनराशि का उपयोग जनकल्याण कार्यों के लिए किया जाए तो देश के करोड़ों नागरिकों को फायदा होगा।

मणिशंकर अय्यर

पूर्व केन्द्रीय मंत्री

60 वां अणुव्रत अधिवेशन सम्पन्न

नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठापना में समर्पित अणुव्रत आंदोलन का 60 वां वार्षिक अधिवेशन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में त्रिदिवसीय विविध आयोजनों के साथ विगत 2, 3, 4 अक्टूबर 2009 को लाडनूं में सम्पन्न हुआ। अणुव्रत अधिवेशन में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, तामिलनाडु, बिहार राज्यों के 140 कार्यकर्ताओं-पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। अधिवेशन में अणुव्रत की तीनों शीर्ष संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। अणुविभा के संस्थापक मोहन भाई जैन, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. छगनलाल शास्त्री, सांसद अर्जुन मेघवाल, राजस्थान के निवर्तमान मुख्य सचिव मीठालाल मेहता, साहित्यकार आलोक भट्टाचार्य की अधिवेशन में प्रेरक उपस्थिति रही।

अणुव्रत अधिवेशन का आयोजन अणुव्रत महासमिति एवं अणुव्रत समिति लाडनूं की संयुक्त भागीदारी में हुआ। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट, उपाध्यक्ष जी. एल. नाहर, विजयराज सुराणा, प्रेमसिंह चौधरी, सुरेन्द्र कुमार जैन, महामंत्री मगन जैन, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, उपमंत्री डॉ. बी.एन. पांडेय, अर्थमंत्री निर्मल एम. रांका, संगठन मंत्री डालचंद कोठारी, जवेरीलाल संकलेचा तथा कार्यसमिति सदस्य सुखवीर सिंह सैनी, सरदारअली पड़िहार, राजेन्द्र सेठिया, डॉ. आनंद प्रकश त्रिपाठी, अर्जुन बापना, डॉ. गोपाल आचार्य, जुगराज नाहर, कल्याणमल गोखरू, अनिल रांका, धर्मचंद चपलोत, लक्ष्मीलाल गांधी, राज गुनेचा, डॉ. कुसुम लूणिया की प्रमुख उपस्थिति थी।

अणुव्रत विश्व भारती के संस्थापक मोहन भाई, अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी, कार्याध्यक्ष टी.के. जैन, महामंत्री संचय जैन, अणुव्रत शिक्षक संसद प्रभारी भीकमचंद नखत तथा अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा, संयुक्त प्रबंध न्यासी सुशील जैन अणुव्रत अधिवेशन में प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

● प्रथम दिवस

अणुव्रत अधिवेशन का शुभारंभ अणुव्रत गीत से हुआ, जिसे नीरज मुनि ने स्वर दिया। अणुव्रत समिति लाडनूं के संरक्षक विजयसिंह बरमेचा एवं अणुव्रत महासमिति के महामंत्री मगन जैन के स्वागत वक्तव्य उपरांत उद्घाटन सत्र को साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल एवं प्रमुख अतिथि राजस्थान सरकार के पूर्व मुख्य सचिव मीठालाल मेहता ने संबोधित किया। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत के इतिहास को प्रस्तुत करते हुए अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को पुनः निखारने का अनुरोध किया तथा वर्ष 2008 का अणुव्रत लेखक पुरस्कार बाल रचनाकार डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी को प्रदान किये जाने की घोषणा की। मोहन भाई एवं डॉ. छगनलाल शास्त्री ने अणुव्रती कार्यकर्ताओं को प्रतीक चिह्न भेंट कर उनकी सेवाओं का सम्मान किया।

अणुव्रत अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में मंचासीन डॉ. छगनलाल शास्त्री, मीठालाल मेहता, डॉ. सोहनलाल गांधी, मोहन भाई जैन एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट

विगत दो वर्षों में जिन अर्थ-प्रदाताओं ने अणुव्रत महासमिति को सर्वाधिक अर्थ सहयोग प्रदान किया उन्हें अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने विशिष्ट योगक्षेमी सम्मान से सम्मानित किया एवं योगक्षेमी विसर्जन योजना को प्रस्तुत किया। इस वर्ष इस सम्मान के अंतर्गत चैन्नई निवासी श्री जुगराज नाहर एवं तुषरा निवासी मगन भाई जैन को सम्मानित किया गया। **डॉ. कर्णावट ने बताया कि विगत दो वर्षों में जब भी अर्थ संकट गहराया मैंने जुगराज नाहर से अनुरोध किया और उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकारते हुए अपने परिजनों की ओर से अर्थ सहयोग भिजवाया। नाहरजी ने विगत दो वर्षों में अणुव्रत महासमिति को जो सहयोग दिया है और भविष्य में भी देने का वचन दिया है उससे लगता है हमें नाहरजी के रूप में पुनः हनूतमलजी सुराना मिल गये हैं।**

डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने राजेन्द्र बरड़िया जयपुर, कमलेश भादानी तिरूपुर, भंवरलाल कर्णावट मुंबई, रमेश धाकड़ मुंबई, बी.सी. भलावत मुंबई, मूलचंद नाहर बैंगलोर को योगक्षेमी के रूप में सम्मानित करने की घोषणा की। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा अणुव्रत के 60 वें अधिवेशन में नई एवं पुरानी दोनों पीढ़ी के कार्यकर्ता उपस्थित हैं। कार्यकर्ताओं की उपस्थित और उत्साह से नई संभावनाएं उदित हो रही हैं। महेन्द्र ने जिस तरह से कार्यकर्ताओं को जोड़ा है उससे अणुव्रत के सातवें दशक में नई चेतना प्रस्फुटित हुई है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है। नैतिकता के बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती और अहिंसा के बिना नैतिकता प्रतिष्ठापित नहीं हो सकती। अहिंसा दिवस की पूरी कार्य योजना हो तथा अहिंसा दिवस के साथ अणुव्रत का समन्वय हो जाये तो अहिंसा दिवस मनाना सार्थक हो जायेगा।

अणुव्रत अधिवेशन के उद्घाटन समारोह को अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. छगनलाल शास्त्री ने भी संबोधित किया। उद्घाटन सत्र का प्रभावी एवं मनभावक संयोजन डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने किया। लाडनूं निवासी स्व. पुष्पराज (फुसराज) भूतोड़िया को अणुव्रत सेवी सम्मान से अलंकृत किया गया। उद्बोधन सत्र के उपरांत परिचय सत्र का क्रम रहा, जिसकी संयोजना बाबूलाल गोलछा ने की।

प्रथम दिवस के मध्याह्नकालीन सत्र में अणुव्रत विश्वभारती की प्रवृत्तियों की गति-प्रगति से प्रतिनिधियों को अवगत कराया गया। अणुविभा के अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी ने अणुव्रत अंतर्राष्ट्रीय, भीकमचंद नखत ने अणुव्रत शिक्षक संसद तथा महामंत्री संचय जैन ने बालोदय प्रवृत्ति का विवरण प्रस्तुत किया। संचय जैन ने श्रव्य एवं दृश्य माध्यम से अणुविभा एवं बालोदय का परिचय देते हुए गति-प्रगति से अवगत कराया।

रात्रिकालीन सत्र युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य एवं जी.एल. नाहर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। दिल्ली प्रादेशिक अणुव्रत समिति, हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति तथा अणुव्रत समिति हनुमानगढ़, सूरतगढ़, श्रीडूंगरगढ़, सरदारशहर, भीलवाड़ा, शाहपुरा,

बीकानेर, जसोल एवं बालोतरा के पदाधिकारियों ने प्रगति प्रतिवेदन का वाचन किया। डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने समागत अणुव्रत समितियों के पदाधिकारियों का परिचय कराते हुए उनके उल्लेखनीय कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने सत्र का संयोजन किया।

संचय जैन, डॉ. कुसुम लूणिया, ओमप्रकाश जैन, ओम बांठिया, के.सी. जैन, सम्पत सामसुखा ने सुझाव देते हुए जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं। संचय जैन, डॉ. कुसुम लूणिया, ओमप्रकाश जैन, डॉ. कर्णावट, ओम बांठिया का विचार था कि शिक्षण संस्थाओं में हमें अणुव्रत आंदोलन के नाम से ही अपना कार्य सुचारु रखना चाहिये क्योंकि अणुव्रत शब्द जन-जन की जुबान पर आ चुका है।

के.सी. जैन का विचार रहा कि अणुव्रत आचार संहिता है। जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान प्रयोग पद्धति है जो अणुव्रत संकल्प को पुष्ट करते हैं अतः विद्यालयों में कार्य जीवन विज्ञान के नाम से होगा तो ज्यादा व्यावहारिक रहेगा।

सम्पत सामसुखा ने कहा अणुव्रत समितियों को जनाधार बढ़ाना होगा। समितियों की सदस्य संख्या बढ़े और कार्यालय सशक्त हो।

बाबूलाल दूगड़ दिल्ली का सुझाव रहा कि अणुव्रत का साहित्य अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध कराया जाये। हमने दिल्ली में एक हजार सदस्य बनाने का निर्णय किया है।

प्रो. देवेन्द्र जैन, भिवानी ने कहा हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति का आगामी वर्ष रजत जयंती वर्ष है। हमने नशामुक्ति अभियान चलाने का निर्णय लिया है। अणुव्रत भावना मासिक पत्रिका का प्रकाशन अधिक सुंदर बने यही प्रयास है।

ओम बांठिया, बालोतरा का सुझाव रहा कि युवा एवं नैतिक मूल्यों से युक्त व्यक्तियों को अणुव्रत समितियों से जोड़ा जाये।

समरूनखान जसोल ने कहा एक जाति-सम्प्रदाय दूसरी जाति सम्प्रदाय के त्यौहार मनायेगी तभी सर्वधर्म सद्भाव का स्थायी विकास होगा।

इस अवसर पर मदन बांठिया ने हनुमानगढ़, अनिल रांका ने सूरतगढ़, डालचंद चिंडालिया ने सरदारशहर, लक्ष्मीलाल गांधी ने भीलवाड़ा, गोपाल पंचोली ने शाहपुरा, ओमप्रकाश जैन ने टिटिलागढ़, उमेश जैन ने बोरड़ा अणुव्रत समिति का कार्य विवरण प्रस्तुत किया।

● द्वितीय दिवस

अणुव्रत अधिवेशन के द्वितीय दिवस के उद्बोधन सत्र को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा अनैतिकता की समस्या अतीत में थी, आज भी है और भविष्य में भी रहेगी। हर व्यक्ति के मन में नैतिकता और अनैतिकता का द्वन्द्व बना रहता है। समाज में होने वाली अनैतिकता-बुराइयों की प्रतिरोधक शक्ति है अणुव्रत। आज सबसे अधिक जरूरत है कि अणुव्रत अनैतिकता की प्रतिरोधात्मक शक्ति के रूप में विकसित हो।

उद्बोधन सत्र को डॉ. सोहनलाल गांधी, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा, डॉ. आलोक भट्टाचार्य, मोहनभाई एवं जी. एल. नाहर ने संबोधित किया। संचालन अणुविभा के मंत्री संचय जैन ने किया। अणुव्रती कार्यकर्ताओं का सम्मान मोहनभाई ने किया।

अणुव्रत प्रवक्ता एवं अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष स्व. सीताशरण शर्मा की स्मृति में दिया जाने वाला श्रेष्ठ अणुव्रत समिति सम्मान डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत समिति बालोतरा को प्रदान किया। अणुव्रत समिति बालोतरा के अध्यक्ष ओम बांठिया, कमला ओस्तवाल एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने प्रशस्ति प्रतीक एवं सम्मान राशि ग्रहण की।

जी.एल. नाहर ने कहा अणुव्रत का लक्ष्य है आदमी, आदमी बना रहे तो मोहन भाई ने कहा अणुव्रत को समझो और अणुव्रती बनो।

अणुव्रत अधिवेशन के उद्बोधन सत्र में महादेव सरावगी फाउन्डेशन कोलकाता द्वारा प्रदत्त अहिंसा प्रशिक्षण पुरस्कार, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र डोम्बिवली मुम्बई को जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया ने प्रदान किया। साहित्यकार डॉ. आलोक भट्टाचार्य ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र डोंबिवली का परिचय प्रस्तुत किया।

मध्याह्न में अणुव्रत महासमिति की साधारण सभा आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने की। महामंत्री मगन जैन ने विगत बैठक विवरण तथा प्रगति प्रतिवेदन 2008-09 का वाचन किया। डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने वर्ष 2008-09 में अणुव्रत महासमिति द्वारा किये गये कार्यों की विवेचना करते हुए उपलब्धियों को प्रस्तुत किया।

अणुव्रत पाक्षिक के संदर्भ में सदस्यों के विचार-सुझाव निम्नानुसार रहे

● **समरून खां जसोल :** सदस्य बनाने पर क्या हमें कमीशन मिलेगा। हम दस ग्राहक बनाएंगे।

● **जीतमल जैन अजमेर :** अणुव्रत के प्रत्येक अंक में अणुव्रत आचार संहिता का प्रकाशन हो।

● **राज गुनेचा दिल्ली :** अणुव्रत पाक्षिक के प्रत्येक सदस्य पांच-पांच सदस्य बनायें। मैं पांच ग्राहक बनाने का वायदा करती हूं।

● **बाबूलाल दूगड़ दिल्ली :** हम दिल्ली से पचास ग्राहक जुटाएंगे।

● **धर्मचंद जैन मरौली :** मैं एक सौ ग्राहक सन् 2010 में बनाऊंगा।

● **डॉ. आनन्द त्रिपाठी :** आगामी वर्ष का हमारा प्रमुख लक्ष्य हो अणुव्रती बनो अभियान।

● **सम्पत सामसुखा :** अणुव्रती बनो अभियान का श्रीगणेश करें।

● **जवेरीलाल संकलेचा अहमदाबाद :** अणुव्रत को नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाये।

● **प्रकाश भंसाली दिल्ली :** मिलावट विरोधी अभियान संचालित किया जाये।

● **राजेन्द्र सेठिया बाडमेर :** आगामी वर्ष अणुव्रत विकास वर्ष के रूप में आयोजित हो। इसके अंतर्गत अणुव्रती बनो अभियान, नशामुक्ति अभियान एवं भ्रष्टाचार विरोधी अभियान संचालित हो।

● **सीताराम टेलर लाडनूं :** यह बार-बार क्यों कह रहे हैं कि जा रहे हैं। आप कहां जा रहे हैं?

व्यापक विचार विमर्श उपरांत विगत बैठक विवरण एवं वार्षिक प्रतिवेदन 2008-09 को उपस्थित सदस्यों ने सर्व सम्मति से पारित किया। अणुव्रत महासमिति के अर्थमंत्री निर्मल रांका ने वर्ष 2008-09

निर्मल रांका अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्वाचित

की ऑडिट रिपोर्ट एवं अंकेक्षक नियुक्ति प्रस्ताव का वाचन किया, जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को पुनः निखारने पर बल दिया तथा देश की चारों दिशाओं में आठ अणुव्रत केन्द्र स्थापित करने और वहां से उस क्षेत्र में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियों को संयुक्त रूप से संचालित करने की कार्ययोजना रखी। डॉ. कर्णावट ने अणुव्रत के कार्य को गति देने की दृष्टि से आगामी चार वर्षों में 100 जीवनदानी अणुव्रती कार्यकर्ताओं के निर्माण तथा 100 योगक्षेमी विसर्जनदाताओं की कतार खड़ी करने का भी अनुरोध किया, जो आगामी पांच वर्षों तक 50,000 या 21000 रु. का आर्थिक सहयोग दे सकें। सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए डॉ. कर्णावट ने अपने द्वारा गठित कार्यसमिति के विघटन की घोषणा की एवं चुनाव अधिकारी राजेन्द्र सेठिया, सह चुनाव अधिकारी डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी से आगामी सत्र के लिए अध्यक्ष का चुनाव कराने की प्रक्रिया प्रारंभ करने का अनुरोध किया।

उपस्थित सदस्यों ने अणुव्रत महासमिति की वर्तमान कार्यसमिति के प्रति आभार ज्ञापित किया। चुनाव अधिकारी राजेन्द्र सेठिया ने चुनाव प्रक्रिया से सदस्यों को अवगत कराया एवं हृदयस्पर्शी निवेदन प्रस्तुत किया। राजेन्द्र सेठिया के चुनाव संबंधी निवेदन ने सदस्यों के अन्तसः को छू लिया। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री द्वारा सौंपे गये तीनों बंद लिफाफों को चुनाव अधिकारी ने खोला एवं उनमें अध्यक्ष पद हेतु वर्णित प्रस्तावों का वाचन किया। अध्यक्ष पद हेतु प्राप्त तीनों प्रस्ताव निर्मल कुमार एम. रांका निवासी बगड़ी के पक्ष में थे एवं तीनों ही वैध थे। अतः चुनाव अधिकारी राजेन्द्र सेठिया ने अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष पद हेतु आगामी सत्र के लिए निर्मल कुमार एम. रांका के निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की।

रात्रिकालीन सत्र में खुली चर्चा, कवि गोष्ठी एवं निर्णय का क्रम रहा। अणुव्रती बनो अभियान पर मुख्यतः चर्चा केन्द्रित रही। मगनभाई जैन, सरदारअली पड़िहार, भंवरलाल चौहान, राज गुनेचा आदि ने कविता-गीतों का संगान कर वातावरण को सरस बनाया तो सत्र को पारिवारिक माहौल भी दिया। विचार-विमर्श उपरांत आगामी वर्ष की कार्ययोजना को स्वीकार करते हुए उसमें अणुव्रती बनो अभियान संचालित करने तथा भ्रष्टाचार विरोधी अभियान, आडंबर विरोधी अभियान को मुखर करने का सर्व सम्मत निर्णय लिया गया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्मल एम. रांका का निवर्तमान हो रहे अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने परिचय दिया तथा उपस्थित सदस्यों ने रांका का भावभरा स्वागत किया।

● तृतीय दिवस

अणुव्रत अधिवेशन के समापन सत्र की अध्यक्षता अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने की। महावीर मुनि ने अणुव्रत गीत का संगान किया। मगन जैन एवं ओमप्रकाश सोनी ने आभार व्यक्त किया। डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अधिवेशन की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते हुए कहा अणुव्रत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। सत्य को जीवन में उतारने की दिशा में अणुव्रत समाज के बढ़े हुए कदमों का राष्ट्रव्यापी स्वागत हुआ है। इसमें तीव्र वेग लाने की दृष्टि से अणुव्रत सम्मेलन में निर्णय लिया गया है कि आगामी वर्ष अणुव्रत विकास वर्ष के रूप में आयोजित हो जिसके अंतर्गत अणुव्रती बनो अभियान, नशामुक्ति अभियान एवं भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का विशेष क्रम हो। आगामी दो वर्षों में एक सौ अणुव्रती कार्यकर्ताओं का निर्माण एवं एक सौ विशिष्ट योगक्षेमी, योगक्षेमी विसर्जनदाताओं का सहयोग एकत्र करने का लक्ष्य रहेगा।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्मल रांका ने कहा मेरे पर जो कृपादृष्टि बरसी है उसके प्रति में कृतज्ञ हूं पूज्य आचार्यश्री का। मैं सभी के सहयोग से अणुव्रत का स्वर तीव्र करने का संकल्प लेता हूं। निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनका मोमेन्टो भेंट कर जी.एल. नाहर, विजयराज सुराणा, निर्मल रांका, बाबूलाल गोलछा, बी.एन. पांडे ने सम्मान किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रतियों को संबोधित करते हुए कहा आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत की यात्रा करके दक्षिण भारत को अणुव्रतमय बनाया था। समय के साथ दक्षिण में अणुव्रत का स्वर कुछ मंद हुआ है। अणुव्रत महासमिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष दक्षिण भारत के हैं। निर्मल रांका के नेतृत्व में दक्षिण भारत में अणुव्रत का स्वर बुलंद होगा और दक्षिण भारत एक बार पुनः अणुव्रत की गतिविधियों का केन्द्र बनेगा। महेन्द्र को अणुव्रत विरासत में मिला है। उसने खूब काम किया, बहुत यात्राएं की, कार्यकर्ताओं को जोड़ा। महेन्द्र और निर्मल दो होते हुए भी एक हैं। समापन सत्र का संयोजन विजयराज सुराणा ने किया।

अणुव्रत समिति लाडनूं के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने आभार ज्ञापित किया। 60 वें अणुव्रत अधिवेशन की आयोजना में अणुव्रत समिति लाडनूं, अ.भा.तेयुप, हरियाणा प्रांतीय सभा का विशेष सहयोग रहा। अणुव्रत समिति लाडनूं के कार्यकर्ताओं ने सर्व व्यवस्थाओं को सुयोजित किया। हरियाणा प्रांतीय सभा ने अणुव्रती प्रतिनिधियों के आवास हेतु हरियाणा भवन निःशुल्क उपलब्ध कराया तो अ.भा. तेयुप ने भी लाडनूं स्थित युवालोक भवन आवास हेतु निःशुल्क उपलब्ध करवाया। अणुव्रत सेवी विजयसिंह बरमेचा ने आतिथ्य व्यवस्था में सहभागिता निभा साधार्मिक वात्सल्य व्यवस्था को आगे बढ़ाया। निर्मल-नरेन्द्र एम. रांका कोयम्बटूर तथा प्रवीण-राजश्री बैद बैंगलोर ने अधिवेशन किट का व्यय भार वहन कर सौजन्य भाव का परिचय दिया। डॉ. त्रिपाठी अधिवेशन व्यवस्था के प्रमुख धुरी रहे। ओमप्रकाश सोनी एवं सीताराम टेलर ने प्रतिनिधियों की सुख-सुविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखा।

कल्याणमल गोखरू को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान प्रदान करते हुए मोहन भाई जैन

राज गुनेचा को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान प्रदान करते हुए मोहन भाई जैन एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट

विजय सिंह बरमेचा को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान प्रदान करते हुए डॉ. छगनलाल शास्त्री

अर्थप्रदाता एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान

अणुव्रत अधिवेशन लाडनूं में अणुव्रत महासमिति द्वारा निम्नांकित अर्थप्रदाताओं, सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं को उनकी सेवाओं एवं विसर्जन उदारता के संदर्भ में सम्मानित किया गया

• विशिष्ट योगक्षेमी सम्मान

1.	*श्री जुगराज नाहर*	*चैन्ने*
2.	*श्री मगन जैन*	*तुषरा*

• योगक्षेमी सम्मान

3.	श्री भंवरलाल कर्णावट	मुम्बई
4.	श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5.	श्री बालचंद भलावत	मुम्बई
6.	श्री राजेन्द्र बरड़िया	जयपुर
7.	श्री मूलचंद नाहर	बैंगलोर
8.	श्री कमलेश भादानी	तिरुपुर

• अणुव्रत सेवी

9.	स्व. श्री पुष्पराज भूतोड़िया	लाडनूं

• ''श्रेष्ठ अणुव्रत समिति सम्मान-2009''

10.	अणुव्रत समिति बालोतरा	

• अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान

11.	श्री जी.एल. नाहर, उपाध्यक्ष	जयपुर
12.	श्री विजयराज सुराणा, उपाध्यक्ष	दिल्ली
13.	श्री प्रेमसिंह चौधरी, उपाध्यक्ष	छोटी खाटू
14.	श्री सुरेन्द्र जैन, उपाध्यक्ष	भिवानी
15.	श्री बाबूलाल गोलछा, संयुक्त मंत्री	दिल्ली
16.	डॉ. बी.एन. पांडेय, उपमंत्री	दिल्ली
17.	श्री निर्मल एम. रांका, अर्थमंत्री	कोयम्बतूर
18.	श्री डालचंद कोठारी, संगठन मंत्री	मुम्बई
19.	श्री सिद्धार्थ शर्मा, संगठन मंत्री	बैंगलोर
20.	श्री जवेरीलाल संकलेचा, संगठन मंत्री	अहमदाबाद
21.	श्रीमती रोजी गोयल, शिक्षा मंत्री	जगराओ
22.	डॉ. कृष्णा मोहनोत, सदस्य	जोधपुर
23.	सुश्री सुशीला बांठिया, सदस्य	नोहर
24.	श्रीमती राज गुनेचा, सदस्य	दिल्ली
25.	श्रीमती आशा नीलू टॉक, सदस्य	जयपुर
26.	प्रो. देवेन्द्र जैन, सदस्य	हिसार
27.	डॉ. गोपाल आचार्य, सदस्य	बीकानेर
28.	श्री भंवरलाल मूंदड़ा, सदस्य	छापर
29.	श्री मीठालाल भोगर, सदस्य	सूरत
30.	श्री गणेश डागलिया, सदस्य	उदयपुर
31.	श्री विजयसिंह बरमेचा, सदस्य	लाडनूं
32.	श्री ओमप्रकाश सोनी, सदस्य	लाडनूं
33.	श्री डालचंद चिंडालिया, सदस्य	सरदारशहर
34.	श्री अर्जुन बाफना, सदस्य	मुम्बई
35.	श्री मुरलीधर कांठेड़, सदस्य	दिल्ली
36.	श्री लक्ष्मीलाल गांधी, सदस्य	भीलवाड़ा
37.	श्री अनिल रांका, सदस्य	सूरतगढ़
38.	श्री सुरेन्द्र दूगड़, सदस्य	पाली
39.	श्री कल्याणमल गोखरू, सदस्य	आसीन्द

अविनाश नाहर को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान प्रदान करते हुए डॉ. महेन्द्र कर्णावट

40.	श्री मदन धोका, सदस्य	कांकरोली
41.	श्री जगदीश बैरवा, सदस्य	पुर
42.	श्री अविनाश नाहर, सदस्य	जयपुर
43.	श्री सरदार अली पड़िहार, सदस्य	बीकानेर
44.	श्री राजेन्द्र सेठिया, सदस्य	गंगाशहर
45.	श्री मायाराम नागवंशी, सदस्य	गुहाननाला
46.	श्री भंवरलाल चौहान, सदस्य	बीकानेर
47.	श्री जसराज चोरड़िया, सदस्य	भीलवाड़ा
48.	श्री रमेश बंसल, सदस्य	भिवानी
49.	श्री प्रेमासिंह तलेसरा, सदस्य	भीलवाड़ा
50.	श्री भूपेन्द्र मूथा, सदस्य	बैंगलोर

योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत-आंदोलन के व्यापक होने की वर्तमान परिस्थितियों में अत्यधिक आवश्यकता है। आगामी पांच वर्षों में अणुव्रत महासमिति की सर्व प्रवृत्तियां सुचारु संचालित हों और इसके आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए, इस दृष्टि से योगक्षेमी विसर्जन योजना का 2009 से प्रारंभ किया गया है। योगक्षेमी योजना के अंतर्गत अर्थ विसर्जन करने वाले अर्थ-प्रदाताओं को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। वर्ष 2009-10 से 2013-14 तक प्रतिवर्ष अर्थ सहयोग करने वाले अर्थप्रदाताओं को विशिष्ट योगक्षेमी (50000=00 प्रतिवर्ष), विशेष योगक्षेमी (21000=00 प्रतिवर्ष) योगक्षेमी (11000=00 प्रतिवर्ष) सम्मान से नवाजा जायेगा। यह योजना अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी समारोह को दृष्टिगत रखते हुए प्रारंभ हुई है। डॉ. महेन्द्र कर्णावट का इस योजना के क्रियान्वयन में विशेष सहयोग एवं प्रेरणा रही है। योगक्षेमी योजना से अभी तक निम्न महानुभाव जुड़े हैं।

• विशिष्ट योगक्षेमी

1.	श्री जुगराज नाहर	चैन्ने
2.	श्रीमती शांता नाहर	चैन्ने
3.	श्री बी.सी. भलावत	मुम्बई
4.	श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5.	श्री भंवरलाल कर्णावट	मुम्बई
6.	श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर
7.	श्री निर्मल-नरेन्द्र रांका	कोयम्बटूर
8.	श्री मगन जैन	तुषरा

• विशेष योगक्षेमी

1.	श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली
2.	श्री सम्पत वागरेचा	वाशी
3.	श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
4.	श्री जसराज बुरड़	जसोल

• योगक्षेमी

1.	श्री जी.एल. नाहर	जयपुर

भंवरलाल चौहान को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान प्रदान करते हुए डॉ. छगनलाल शास्त्री

2.	श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3.	श्री मीठालाल भोगर	सूरत
4.	श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5.	श्री गुणसागर-डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमंद

योगक्षेमी विसर्जन योजना में अधिकाधिक महानुभावों को योगदान मिले यही हमारा अनुरोध है। आपका सहयोग हमारा आधार सम्बल बनेगा।

जीवनदानी अणुव्रत कार्यकर्ता

अणुव्रत आंदोलन के सातवें दशक की प्रारंभिक वेला में निम्नांकित कार्यकर्ताओं ने जीवनभर अणुव्रत के विकास के लिए प्रतिदिन 2 से 4 घंटे का समय विसर्जित करने की घोषणा 60 वें अणुव्रत अधिवेशन में की है

1.	डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमंद
2.	श्री अशोक भाई संघवी	बाव
3.	डॉ. बी.एन. पांडेय	दिल्ली
4.	श्री जी.एल. नाहर	जयपुर
5.	श्री भंवरलाल चौहान	बीकानेर
6.	श्री कल्याणमल गोखरू	आसीन्द
7.	श्री कैलाश शर्मा	आसीन्द
8.	श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
9.	श्री जसराज जैन	सायरा
10.	श्री जवाहरलाल श्रीमाल	जोधपुर
11.	श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली
12.	श्रीमती राज गुनेचा	दिल्ली
13.	श्री अनिल रांका	सूरतगढ़

अणुव्रत महासमिति के बढ़ते कदम

वर्ष 2008–2009 में अणुव्रत पाक्षिक के दो संग्रहणीय विशेषांक– *अहिंसा यात्रा अंक द्वितीय* एवं *अणुव्रत विचार क्रांति के छः दशक* का गौरवशाली प्रकाशन हुआ और अणुव्रत पाक्षिक की प्रसार संख्या का आंकड़ा 5100 हुआ।

आलोच्य वर्ष 2008-2009 में अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत दर्शन के अनुरूप निम्न गतिविधियों–प्रवृत्तियों का संचालन किया गया–

- **अणुव्रत पाक्षिक**
- **अणुव्रत लेखक मंच**
- **अहिंसा समवाय**
- **अणुव्रत ग्राम**
- **अणुव्रत संसदीय मंच**
- **अणुव्रत विचार मंच**
- **अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह**
- **नशामुक्ति चेतना अभियान**
- **संगठनात्मक गतिविधियां**
- **प्रकाशन**
- **अणुव्रत अधिवेशन**
- **अणुव्रत का : 61वां स्थापना दिवस**
- **अणुव्रत महासमिति वेबसाइट**

❑ अणुव्रत पाक्षिक

अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने की दृष्टि से विगत पाँच दशकों से अणुव्रत महासमिति द्वारा 'अणुव्रत पाक्षिक' पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। प्रकाशन के 54 वें वर्ष में पत्रिका का नियमित प्रकाशन हुआ है। अणुव्रत पाक्षिक का 1–31 दिसम्बर 2008 का संयुक्तांक ''अहिंसा यात्रा द्वितीय'' विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ। 500 पृष्ठों के इस विशेषांक में 330 पृष्ठ पठनीय सामग्री, 32 पृष्ठ रंगीन फोटो तथा 67 रंगीन पृष्ठ + 71 श्वेत–श्याम कुल 138 पृष्ठ विज्ञापन के हैं। विशेषांक में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के आध्यात्मिक नेतृत्व में सम्पन्न अहिंसा यात्रा के वर्ष– 2005, 2006, 2007 (दिल्ली, भिवानी, उदयपुर) का विस्तृत विवरण, घटनाक्रमों का विवेचन तथा ऐतिहासिक चित्रों का संकलन थे। अहिंसा यात्रा के द्वितीय चरण के तीन वर्षों के इतिहास को इस

विशेषांक में सुरक्षित रखने का सार्थक प्रयास हुआ है।

अणुव्रत आंदोलन के षष्टीपूर्ति के अवसर पर अणुव्रत के ऐतिहासिक तथ्यों से युक्त अणुव्रत पाक्षिक का ''अणुव्रत विचार क्रांति के छः दशक'' विशेषांक का प्रकाशन 1 मार्च 2009 को हुआ। यह विशेषांक अणुव्रत इतिहास एवं दर्शन की जानकारी से युक्त 168 पृष्ठों की अणुव्रत संदर्भ पुस्तक है।

आलोच्य वर्ष में 30 सितम्बर 2009 तक 'अणुव्रत' पाक्षिक की प्रसार संख्या 5100 रही। इसकी सदस्यता के क्रम में 712 दस वर्षीय 2327 त्रैवार्षिक एवं 1149 वार्षिक, अन्य 912 (अणुव्रत समितियां, अहिंसा समवाय, अणुव्रत लेखक मंच, साहित्यकार, राजनेता, प्रबुद्धजन एवं कार्यालय प्रतियां) कुल 5100 हैं।

अणुव्रत पाक्षिक सदस्यता अभिवृद्धि अभियान में सर्वश्री जुगराज नाहर चैन्ने, रमेश धाकड़ मुम्बई, भंवरलाल कर्णावट मुंबई का विशेष अर्थ योगदान रहा। सर्वश्री निर्मल रांका कोयम्बटूर, जवाहरलाल श्रीमाल–जोधपुर, जसराज जैन–सायरा, जी.एल. नाहर–जयपुर, हंसराज जैन–रायबरेली, डालचंद चिंडालिया–सरदारशहर, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति, अणुव्रत समिति मुम्बई एवं अणुव्रत समिति गंगापुर, भीलवाड़ा, सरदारशहर, सायरा इत्यादि का सदस्यता अभिवृद्धि अभियान में सराहनीय योगदान रहा।

आलोच्य वर्ष में अणुव्रत पाक्षिक के लिए विज्ञापन संकलन में सर्वश्री अमृतलाल भंसाली बैंगलोर, भूपेन्द्र मूथा बैंगलोर, कमलेश भादानी तिरूपुर, निर्मल एम. रांका कोयम्बटूर, डालचंद कोठारी मुम्बई, अर्जुन बाफना मुम्बई, डॉ. महेन्द्र कर्णावट राजसमंद, जी. एल. नाहर जयपुर, विजयराज सुराणा नई दिल्ली, बाबूलाल गोलछा नई दिल्ली, मीठालाल भोगर सूरत, लक्ष्मीलाल बापना सूरत, जवाहरलाल श्रीमाल जोधपुर, डालचंद चिंडालिया सरदारशहर, एल.एल. गांधी भीलवाड़ा, जसराज जैन सूरत, हंसराज जैन रायबरेली, कर्नाटक प्रादेशिक

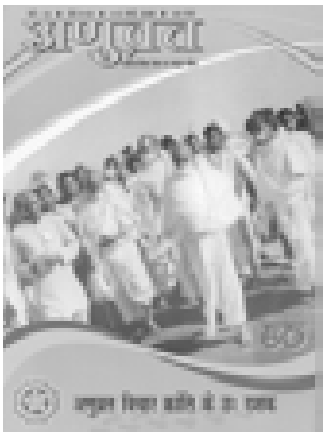

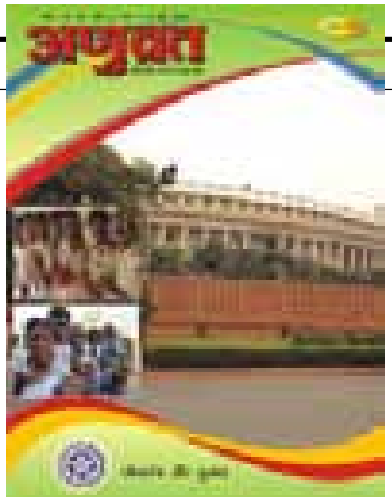

आलोच्य वर्ष में अणुव्रत पाक्षिक के नियमित अंकों में ही विविध समसामयिक विषयों पर निम्नानुसार विशिष्ट अंकों का प्रकाशन हुआ–

नारी विमर्श अंक	:	**1–15 अक्टूबर 2008**
लोकतंत्र एवं चुनाव अंक	:	**16–31 अक्टूबर 2008**
आतंकवाद अंक	:	**1–15 नवम्बर 2008**
लोकतंत्र और चुनाव अंक	:	**1–15 अप्रैल 2009**
लोकतंत्र और चुनाव अंक	:	**16–30 अप्रैल 2009**
लोकतंत्र और चुनाव अंक	:	**1–15 मई 2009**
बाल सरोकार अंक	:	**16–31 मई 2009**
पर्यावरण संरक्षण अंक	:	**1–15 जून 2009**
धर्म और अध्यात्म अंक	:	**16–30 जून 2009**
संस्कृति अंक	:	**1–15 सितंबर 2009**

अणुव्रत समिति बैंगलोर, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति जयपुर, अणुव्रत समिति सरदारशहर, सायरा, मुम्बई इत्यादि का सक्रिय सहयोग रहा।

अणुव्रत पाक्षिक के अंकों में अध्यात्म, अणुव्रत, अहिंसा, स्वास्थ्य, आहार, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, राष्ट्रीय घटनाक्रम, इतिहास, पर्यावरण, बाल साहित्य, नारीलोक, काव्य तथा समसामयिक विषयों के साथ अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों का प्रकाशन हुआ है।

चालीस पठनीय पृष्ठों एवं चार बहुरंगी मुख पृष्ठों से युक्त अणुव्रत पाक्षिक का संपादन अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट के हाथों हो रहा है। यह भी उल्लेखनीय है कि 1 दिसंबर 2002 से डॉ. महेन्द्र कर्णावट की मानद संपादक के रूप में सेवाएं अणुव्रत महासमिति को प्राप्त हो रही हैं।

❑ अणुव्रत लेखक मंच

अणुव्रत महासमिति द्वारा संचालित अणुव्रत लेखक मंच एक वैचारिक उपक्रम है। इसके माध्यम से लेखन एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को बल दिया जा रहा है। स्वस्थ एवं नैतिक लेखन से जुड़े साहित्यकारों की शक्ति संगठित हो और वे समाज-राष्ट्र को नई दिशा दें इस दृष्टि से अणुव्रत लेखक मंच द्वारा स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर लेखक संगोष्ठियों- सम्मेलनों का समय-समय पर आयोजन होता है।

● स्व. हुकमचंद सेठिया जलगांव (श्रीडूंगरगढ़) की स्मृति में प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला अणुव्रत लेखक पुरस्कार–2007 जयपुर के लब्ध प्रतिष्ठित प्राध्यापक एवं साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' को जयपुर अणुव्रत अधिवेशन में 8 नवम्बर 2008 को श्री ठाकरमल सेठिया एवं परिजनों ने भेंट किया। मगन जैन ने प्रशस्ति–पत्र का वाचन किया। पुरस्कार राशि 51000 रु., प्रशस्ति–पत्र एवं शॉल सेठिया परिवार ने डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' को भेंट किये।

● अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में इस वर्ष आगामी 13–14 अक्टूबर 2009 को लाडनूं में द्विदिवसीय राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन अणुव्रत समिति लाडनूं एवं अणुव्रत महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है।

मूल्यों से युक्त जीवन शैली अणुव्रत लेखक मंच से जुड़े रचनाकारों की प्रथम अनिवार्यता है इसी बिन्दु को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत लेखक मंच के कार्य को गति दी गयी है। वर्तमान में अणुव्रत लेखक मंच से 168 साहित्यकार, पत्रकार जुड़े हुए हैं।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2007 सेठिया परिवार एवं अणुव्रत महासमिति के तत्कालीन पदाधिकारियों से ग्रहण करते हुए डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

अहिंसा यात्रा निष्पत्ति समारोह में आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण

❑ अहिंसा समवाय

शाश्वत सत्य अहिंसा की दिशा में कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं का एक समवाय बने और एक-दूसरे के सहयोगी बनते हुए अहिंसा के अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रयोग आगे बढ़े। इसी दृष्टि से अणुव्रत महासमिति अहिंसा समवाय प्रवृत्ति का संचालन कर रही है। **अहिंसा समवाय के अन्तर्गत 148 व्यक्तियों-संस्थानों** से नियमित सम्पर्क इस वर्ष साधा गया है एवं उन्हें अहिंसा से संबंधित प्रचारात्मक सामग्री प्रेषित की गई है।

● 25 जनवरी 2009 को अणुव्रत महासमिति एवं गांधी सेवा सदन के संयुक्त तत्वावधान में राजसमंद में 'महिला हिंसा एवं उत्पीड़न' के संदर्भ में महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में घरेलू हिंसा, भ्रूणहत्या के संभावित खतरों तथा महिला हिंसा से संबंधित कानूनी पक्षों को स्पष्ट किया गया।

● 30 मई 2009 को चंबल घाटी में दस्युओं की शरणस्थली के रूप में विख्यात देवगढ़ ग्राम में द्विदिवसीय संगोष्ठी लोकमहल, तानसेन खेलकूद समिति देवगढ़, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, अणुव्रत महासमिति, भारत गौ सेवक समाज

सहमिलन, सहचिंतन, सह निर्णय एवं सह क्रियान्वयन के आधार पर अहिंसा समवाय प्रवृत्ति को गति दी गयी है।

की सहभागिता में आयोजित हुई। संगोष्ठी में कृषि–गौ संरक्षण में समाज एवं सरकार की भूमिका तथा आपदा प्रबंधन में पंचायतों की भूमिका एवं सूचना क्रांति का महत्व विषय पर व्यापक विचार–विमर्श हुआ। गोष्ठी का उद्घाटन अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री एवं स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी. एन. पांडेय ने किया। द्विदिवसीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान के विभागाध्यक्ष डॉ. चन्दन घोष, दिनकर राव, संजय झा, आशीष कुमार, भारत गौ सेवक समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुखवीर सिंह सैनी, नारायण अनाथ गौ सेवा समिति मथुरा के स्वामी दिगम्बर नागा बाबा, श्री रामजानकी मंदिर के सन्यासी मोहन शरण, बेहर तथा देवगड़ के ग्रामवासियों की प्रमुख उपस्थिति रही। अणुव्रत महासमिति के प्रतिनिधि एल.आर. भारती ने अणुव्रत आंदोलन की गोष्ठी में विशद् चर्चा की।

❑ अणुव्रत ग्राम

● अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान एवं अणुव्रत महासमिति के सहयोग से गंगापुर के निकटवर्ती ग्राम मैलोनी को अणुव्रत ग्राम के रूप में विकसित किया जा रहा है। ग्राम को पूर्णतया नशामुक्त किया गया है। वाचनालय, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का नियमित संचालन हो रहा है। अणुव्रत ग्राम की स्वच्छता पर भी ध्यान दिया गया है। राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा एवं चिकित्सा व्यवस्थाएं उपलब्ध कराई गई हैं। अणुव्रत सेवी देवेन्द्रकुमार हिरण, जगदीश बैरवा अणुव्रत ग्राम मैलोनी के विकास में संलग्न हैं।

● अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत समिति आसीन्द के सहयोग से आसीन्द के निकट बागा बा का खेड़ा ग्राम को अणुव्रत ग्राम के रूप में विकसित किया जा रहा है। अणुव्रत महासमिति कार्यकारिणी के सदस्य कल्याणमल गोखरू तथा सुभाष जैन, कैलाशचन्द्र शर्मा इत्यादि कार्यकर्त्ता ग्राम विकास के कार्यों में संलग्न हैं। वर्तमान में स्वच्छता, व्यसनमुक्ति एवं शिक्षा का कार्य चल रहा है। ग्राम के प्रवेश मुख पर अणुव्रत द्वार का निर्माण किया गया है। स्थानीय विधायक कोष से प्राप्त अर्थ सहयोग से ग्राम के मध्य ढ़ाई बीघा जमीन पर अणुव्रत पार्क का भी निर्माण किया गया है। अणुव्रत पार्क की जमीन का आवंटन जिलाधीश भीलवाड़ा ने निःशुल्क किया है।

● अणुव्रत महासमिति एवं अणुव्रत

अणुव्रत समिति गंगापुर, अणुव्रत समिति आसीन्द एवं अणुव्रत समिति उदयपुर के तत्वावधान एवं अणुव्रत महासमिति के सहयोग से मैलोनी, बागा बा का खेड़ा एवं उमरड़ा ग्रामों को अणुव्रत ग्राम के रूप में विकसित किया जा रहा है। ग्रामों को नशामुक्त किया गया है। यहां वाचनालय, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का नियमित संचालन हो रहा है।

समिति उदयपुर के तत्त्वावधान में उदयपुर के निकटवर्ती ग्राम उमरड़ा को एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज के सहयोग से अणुव्रत ग्राम के रूप में विकसित करने का क्रम प्रारंभ हुआ है। ग्राम विकास के इस क्रम में आदर्श वाक्यों का भित्ति अंकन किया जा चुका है। ग्रामवासियों में स्वच्छता एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने का अभियान गतिशील है। वृक्षारोपण के साथ ही पशु एवं मानव चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया है। अणुव्रती कार्यकर्ता गणेश डागलिया इस दिशा में सतत कार्यशील है।

❑ अणुव्रत संसदीय मंच

वर्ष 2008 में सम्पन्न हुए छः राज्यों के विधानसभा चुनावों एवं वर्ष 2009 में सम्पन्न हुए लोकसभा चुनावों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान अणुव्रत संसदीय मंच द्वारा संचालित किया गया। स्थानीय अणुव्रत समितियों, सार्वजनिक संस्थाओं एवं तेरापंथी सभाओं ने अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को सफल बनाया। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के संदर्भ में अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रचारात्मक परिपत्रों का प्रकाशन किया गया जो सभी संस्थाओं को निःशुल्क प्रेषित किया गया। अणुव्रत चुनाव शुद्धि प्रचारात्मक सामग्री का स्थानीय स्तर पर भी पुनर्मुद्रण हुआ।

देश के छः राज्यों में संपन्न हुए विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों के मद्देनजर स्वच्छ एवं स्वस्थ मतदान हेतु देश भर में चलाये गये अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का विवरण निम्न प्रकार से है–

● 4 अक्टूबर 2008 को अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में संचालित अणुव्रत संसदीय मंच की ओर से राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा अणुविभा केन्द्र जयपुर में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में ''चुनाव शुद्धि अभियान'' के संदर्भ में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी में आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, मुनि किशनलाल, न्यायाधिपति पानाचंद जैन, मानवाधिकार आयोग राजस्थान के अध्यक्ष एन.के. जैन, जमायते इस्लामी हिन्द राजस्थान के अध्यक्ष इंजीनियर मोहम्मद सलीम, समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष सवाई सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता रेणुका पामेचा, अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर, अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' एवं चुनाव शुद्धि अभियान जयपुर के संयोजक अजय कुमार नागौरी की प्रमुख उपस्थिति रही।

संगोष्ठी में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा–सत्ता व धन का एक गठजोड़ है, यह चिंता का विषय है। लोकतंत्र को पार्टीतंत्र समझने के कारण ही समस्या जटिल होती जा रही है। प्रत्याशी झूठे आश्वासन देकर मतदाताओं को प्रभावित करते हैं। जनता को निराश होने की आवश्यकता नहीं। नैतिकता में आस्था रखते हुए चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत सभी संस्थाएं अपना प्रयत्न जारी रखें एवं मतदाताओं को मुख्यतः निम्न दो बिन्दुओं के संदर्भ में प्रशिक्षित करें–

1. प्रलोभन और भय से मतदान नहीं करूंगा।

2. शराब व अन्य अवैध तरीकों से मुक्त रहते हुए मतदान करूंगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने प्रेरणा पाथेय देते हुए कहा–चुनाव में मताधिकार का प्रयोग जाति एवं पार्टी विशेष के प्रत्याशी के पक्ष में ही किया जाता है। यह सबसे बड़ी समस्या है। प्रत्याशी कैसा है – इसका निर्धारण कैसे हो? सत्ता प्राप्ति के पश्चात् आचरण कैसा करेंगे? इन सब बातों पर चिंतन मनन कर कोई मध्यम मार्ग खोजा जाना चाहिए।

● 18 अक्टूबर, 2008 को अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत भवन दिल्ली में चुनाव शुद्धि विषय पर महत्वपूर्ण संगोष्ठी आयोजित हुई। इसमें विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. सुधा अरोड़ा ने की। डॉ. सुधा अरोड़ा ने कहा कि चुनावों में लोकतंत्र के स्थापित मूल्यों को बनाए रखने के लिए राष्ट्र के सही निर्माण हेतु चुनाव शुद्धि के लिए जनजागरण आवश्यक हो गया है। इस अवसर पर गंगासिह तंवर, अरूण कुमार पांडे, रजनीकांत शर्मा, सुखबीर सिंह सैनी, गिरीश जुयाल, राज गुनेचा, डॉ. बी.एन. पांडेय एवं एल.आर. भारती ने चुनावों में अनैतिक प्रवृत्तियों को रोकने के संदर्भ में चर्चा की।

● 29 नवंबर 2008 को दिल्ली में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के सान्निध्य में चुनाव शुद्धि अभियान संगोष्ठी में पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, स्वतंत्रता सेनानी डॉ.

बी.एन. पांडेय, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के.एल. जैन की प्रमुख उपस्थिति रही।

■ लोकसभा चुनाव (अप्रैल 2009) के मद्देनजर स्वच्छ एवं स्वस्थ मतदान हेतु अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का का प्रारंभ 29 मार्च 2009 को बीदासर में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के कर कमलों से हुआ।

29 मार्च 2009 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने श्रीमद् मघवा समवसरण बीदासर में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को संबोधित करते हुए कहा–सभी पार्टियां चुनाव घोषणा पत्र निकालती है। वे सारे प्रलोभन के पुलिदें हैं। सभी बड़े–बड़े प्रलोभन देते हैं पर यह कोई नहीं कहते है कि हमारा उम्मीदवार पैसा नहीं बांटेगा, शराब नहीं पिलायेगा इसलिए उसे वोट दें। जब इस तरह के अनैतिक कार्य नहीं होंगे तभी चुनाव शुद्ध होंगे।

आचार्यश्री ने कहा–जब समाज, सरकारी कार्यालयों और बड़ी–बड़ी संस्थाओं में नैतिकता का मूल्य ही नहीं आंका जायेगा तब चुनाव में नैतिकता कहां से आयेगी? देश को आजाद हुए सातवां दशक चल रहा है। इतने लंबे समय के बाद भी लोकतंत्र में नैतिकता जरूरी है या नैतिकता का प्रशिक्षण होना चाहिए, ऐसा स्वर केवल आचार्य तुलसी ने ही मुखरित किया है और कहीं से यह स्वर मुखरित नहीं हुआ है। नैतिकता के बिना न्याय की आशा नहीं कर सकते। जब नैतिकता का महत्त्व ही नहीं समझा जायेगा तब न्याय कहां से होगा? वर्तमान में धर्म के नाम पर बहुत कुछ चल रहा है। कारण स्पष्ट है, क्रियाकाण्ड पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है, पर नैतिकता का स्थान नहीं है। अतः एक ऐसे सतत अभियान की जरूरत है जो समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा पैदा कर सकें। **अणुव्रत महासमिति के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा चलाये जाने वाला चुनाव शुद्धि अभियान दीपक के प्रकाश तुल्य है। पर यह प्रकाश भी सार्थक होगा क्योंकि इससे अनैतिकता, भ्रष्टाचार का अंधकार और गहरा नहीं हो सकेगा। इस अभियान से मतदाता और मत प्राप्त करने वालों को यह सुनने को मिलेगा कि जो वह कर रहे हैं वह अच्छा है या नहीं इसका विवेक करें।**

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ चुनाव शुद्धि पोस्टर का लोकार्पण करते हुए। साथ में अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष विजयराज सुराणा

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि स्वतंत्रता के समय गांधीजी की कल्पना थी कि भारत ऐसा देश होगा जहां भ्रष्टाचार, शराब आदि से दूरी होगी और नैतिकता को जीवन का अंग बनाया जायेगा। यह कल्पना केवल कल्पना ही रह गई है, साकार नहीं हो सकी। आचार्यश्री ने चुनाव में बढ़ते अशुद्ध वातावरण पर कहा कि आज देश के सामने बुराई है वह बड़ी समस्या नहीं है। उससे भी बड़ी समस्या है कि बुराई पर अंगुली नहीं उठ रही है। **अणुव्रत महासमिति ने अंगुली उठाने का प्रयत्न किया है। यह अच्छा प्रयत्न है। चुनाव के समय क्या–क्या हो रहा है, राष्ट्र कहां जा रहा है इस पर चिंतन होना चाहिए।**

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा–सभी दलों के प्रतिनिधियों को एक दूसरे पर झूठे आरोप लगाने से बचना चाहिए। गलत नीतियों का खुलासा किया जा सकता है, पर जो नहीं है, उसका आरोप लगाना उचित नहीं है। जहां राष्ट्रहित का सवाल हो वहां पार्टी गौण हो जानी चाहिए। नैतिकता नहीं है तो अर्थ के संदर्भ में भी समस्या है, रोटी के संदर्भ में भी समस्या है और काम के क्षेत्र में भी समस्या पैदा हो सकती है। नैतिकता और सच्चाई ऐसे तत्व हैं जो समाज को अच्छा बनाने में और व्यक्ति को अच्छा रखने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। भाषण में भी नैतिकता और प्रामाणिकता रहती है तो मत प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति सही रास्ते पर है, ऐसा माना जा सकता है।

लोकसभा चुनावों के मद्देनजर अणुव्रत महासमिति द्वारा देशभर में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान संचालित हुआ। अणुव्रत महासमिति ने तीन लाख परिपत्र, पेम्फलेट देशभर की अणुव्रत समितियों, तेरापंथी सभाओं एवं अन्य सार्वजनिक संस्थाओं को भेजे। सार्वजनिक– रचनात्मक संस्थाओं के सहयोग से देश भर में इस अभियान को गति दी गयी। चुनाव शुद्धि रैलियां, गोष्ठियों, सेमिनार एवं भाषणों के द्वारा मतदाताओं को जागरूक किया गया। आंदोलन को और अधिक विस्तृत करने हेतु स्थानीय संस्थाओं ने अणुव्रत प्रचार सामग्री का अपने स्तर पर पुनर्मुद्रण करवाया।

अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत अविनाश नाहर, जयपुर ने अपनी सूझबूझ से मारुति वेन को अणुव्रत चुनाव रथ का आकार दिया जिसे देखते ही दर्शकों के मन में चुनाव प्रक्रिया को स्वस्थ करने के भाव अंकुरित हुए। अणुव्रत चुनाव शुद्धि रथ पर ''मतदाता ध्यान दें'' एवं ''आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन'' इत्यादि वाक्यों का बहुरंगीय चित्रों के साथ अंकन किया गया। अणुव्रत चुनाव रथ ने जयपुर नगर, जयपुर जिले के ग्राम्य अंचलों, बीदासर, राजसमंद, भावा, लावा सरदारगढ़, आमेट, केलवा, पडासली, संबोधि उपवन, लाम्बोड़ी, दिवेर, देवगढ़, भीम, चारभुजा, कुंआरिया, कुरज, रेलमगरा, खंडेल, धोइन्दा, पीपरड़ा, बड़ारड़ा, सनवाड़, पूठोल,

पिपलांतरी, घाटा–थोरिया इत्यादि राजसमंद जिले के ग्रामों का परिभ्रमण कर स्वस्थ मतदान के प्रति मतदाताओं को जागरूक किया। भीलवाड़ा जिले के गंगापुर, रायपुर, देवरिया, मैलोनी, आमली, आसीन्द, दौलतगढ़, राजाजी का करेड़ा, हाथीसर, तिलोली, बेमाली, कालादेह सोमानिया, उमरवाड़ा, उल्लाई, सालेरा, खांखला इत्यादि ग्राम्य अंचलों में अणुव्रत चुनाव रथ ने मतदाताओं का ध्यान आकर्षित कर चरित्रशील, ईमानदार और राष्ट्रभक्त प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने की अपील की।

देश भर में संचालित हुए अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

पंजाब : बाघा सीमा से चुनाव शुद्धि अभियान 23 मार्च, 2009 को दीवान टोडरमल जैन अग्रवाल सभा, समूह जैन सभा सरहिंद, जिला फतेहगढ़ साहिब के सहयोग से अणुव्रती कार्यकर्त्ता विजय गोयल के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। यह अभियान बाघा सीमा, अमृतसर से जालंधर, लुधियाना, खन्ना, सरहिंद, फतेहगढ़ साहिब, चमकौर साहिब रोपड़, आनंदपुर, नैनादेवी, करीतपुर साहिब, कुराली होता हुआ 27 मार्च 2009 को चंडीगढ़ पहुंचा। 28 मार्च 2009 को प्रातः अणुव्रत भवन सेक्टर–24 चंडीगढ़ से चलकर पंचकुला, जीवकपुर, डेरा बसी, लालडू, वनुड़, राजपुरा से होती हुई चुनाव शुद्धि अभियान की यह रैली, पटियाला पहुंची। जहां–जहां से इस रैली में शामिल वाहनों और लोगों का कारवां गुजरा, स्थानीय जनता ने गर्मजोशी से स्वागत किया गया। बाघा सीमा से प्रारंभ पंजाबव्यापी अणुव्रत चुनाव यात्रा में अणुव्रत समितियों, तेरापंथी सभाओं, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों एवं अन्य संगठनों के कार्यकर्तागण साथ में चलते रहे और मार्गवर्ती गांव, कस्बों एवं नगरों में स्वस्थ मतदान के प्रति लोगों को प्रेरित किया गया। विजय गोयल के नेतृत्व में संचालित इस यात्रा ने गंगानगर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, गंगाशहर, बीकानेर, बीदासर, जोधपुर, जयपुर, दिल्ली का भी स्पर्श किया और बीदासर में आचार्य प्रवर से आशीर्वाद लिया। विजय गोयल ने अपने सहयोगियों के साथ पंजाबव्यापी चुनाव शुद्धि यात्रा का संचालन किया। विजय गोयल ने लगभग एक माह का समय इस यात्रा में दिया।

जयपुर : राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी.एल. नाहर के नेतृत्व में गुलाबी नगरी जयपुर में मतदाताओं को जागरूक करने हेतु चुनाव शुद्धि रैली का आयोजन किया गया। 22 मार्च को अभिभावक समन्वय समिति जयपुर के अध्यक्ष आलोक जैन के नेतृत्व में मालवीय नगर एपेक्स सर्किल में आयोजित सम्मेलन में शहर के वकील, समाज सेवियों सहित स्थानीय सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण शामिल हुए। अणुव्रत चुनाव शुद्धि रथ को शहर की मुख्य सड़कों पर घुमाया गया। रैली में राजस्थान के पूर्व शिक्षा मंत्री और विधायक प्रतापसिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में चुनाव शुद्धि अभियान को गति दी गयी। क्षेत्र के झुग्गी–झोपड़ीवासियों ने आश्वासन दिया कि वे स्वच्छ मतदान करेंगे। 24 मार्च को ट्रांसपोर्ट नगर जयपुर के व्यवसायियों के बीच इस

विजय गोयल के नेतृत्व में बाघा सीमा से प्रारंभ हुई पंजाबव्यापी अणुव्रत चुनाव शुद्धि यात्रा का प्रारंभिक दृश्य

अभियान के तहत संगोष्ठी आयोजित की गयी और सांगानेर क्षेत्र में पोस्टर्स का वितरण कर स्वच्छ चुनाव की दिशा में लोगों का ध्यान आकृष्ट किया गया। 25, 26, 27 एवं 28 मार्च 2009 को क्रमशः जयपुर बनीपार्क, दयानंद विधि विद्यालय जवाहरनगर, अशोक मार्ग सी. स्कीम जयपुर, रामकृष्ण मिशन प्रांगण, सी. स्कीम जयपुर, गांधीनगर रेलवे स्टेशन, मालवीय नगर क्षेत्र, टैगोर कॉलोनी, निर्माण कॉलोनी, मानसरोवर के विभिन्न विद्यालयों–महाविद्यालयों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किये गये। जयपुर से 20 कि.मी. की दूरी तक विभिन्न सार्वजनिक एवं संघीय संस्थाओं के सहयोग से अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को जोर–शोर से चलाया गया है। इसमें प्रमुख रूप से धर्मसिंह क्टेवा, पंचशील जैन तथा साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' का सहयोग रहा।

29 मार्च 2009 को कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान द्वारा विनोबा ज्ञान मंदिर बापूनगर, जयपुर में ''क्या गांधी संदर्भहीन हो गये हैं?'' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित सभी पुरुष एवं महिलाओं में प्रचारात्मक सामग्री का वितरण किया गया। 31 मार्च को पलसाना, रींगस, सालासर क्षेत्रों के व्यवसायियों एवं नागरिकों को चुनाव शुद्धि अभियान से संबंधित प्रचार सामग्री उपलब्ध करवाने के साथ पेम्फलेटों में उल्लेखित मुख्य बिन्दुओं पर विशेष चर्चा की गई। 1 अप्रैल, 09 को आचार्य महाप्रज्ञ से मंगल पाठ सुन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात् बीदासर से प्रस्थान कर चाड़वास, छापर, सुजानगढ़, सेवकबड़ी, नेछवा, सीकर एवं चौमू क्षेत्रों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान से संबंधित प्रचार–प्रसार सामग्री का वितरण किया गया। 2 अप्रैल, 09 को छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़ राजा पार्क, टोंक फाटक आदि क्षेत्रों में चुनाव शुद्धि अभियान से संबंधित प्रचार–प्रसार सामग्री का वितरण करने के साथ अनेकानेक व्यक्तियों से विचार–विमर्श किया गया। 5 अप्रैल, 09 को आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशानुसार अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के संदर्भ में ''चुनाव शुद्धि अभियान में साहित्यकारों की क्या भूमिका हो सकती है?'' विचार गोष्ठी का आयोजन साध्वीश्री संघमित्रा के सान्निध्य में जयपुर स्थित भिक्षु साधना केन्द्र श्यामनगर में किया गया। इस अवसर पर जयपुर नागरिक परिषद के अध्यक्ष पूर्व आई.ए.एस. सत्यनारायण सिंह, सिद्धराज भंडारी, राष्ट्रीय जन चेतना संघ के अध्यक्ष कृष्णवीर द्रोण, अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष जसवीर सिंह ने विचार प्रकट किए।

10 अप्रैल 09 को राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा एक चुनाव जागृति यात्रा रैली का आयोजन विजय गोयल के नेतृत्व में किया गया। रैली गंगानगर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, बीकानेर, बीदासर से होते हुए जयपुर पहुंची। रैली राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी. एल. नाहर के नेतृत्व में एवं उपेन्द्रकुमार के संचालन में नारायण सर्किल पर पहुंची। रैली मालवीय नगर से जवाहरनगर नेहरू मार्ग, टोंक रोड, गोपालपुरा रोड, त्रिवेणी नगर, मानसरोवर, लिंक रोड, केशव विहार, मंगल विहार, गोपालपुरा बाई पास गूजर की थड़ी, न्यू सांगानेर रोड, श्यामनगर भिक्षु साधना केन्द्र में प्रवासित साध्वी संघमित्रा से मार्ग–दर्शन लेकर अजमेर रोड, गवर्नमेंट हॉस्टल खासा कोठी सर्कल, बनीपार्क, सिंधी कैम्प बस स्टेण्ड, अजमेरी गेट, सवाई मानसिंह अस्पताल पहुंची। जयपुर ईटीवी राजस्थान द्वारा चुनाव शुद्धि अभियान एवं रैली के क्रम को प्रदर्शित किया गया।

लाडनूं : अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में एवं मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के नेतृत्व में हरिजन बस्ती, रेगर बस्ती, खटीक बस्ती, तेली रोड, बस स्टैण्ड एवं पट्टियों में मतदाताओं से सम्पर्क कर चुनाव शुद्धि का प्रयास किया गया। गंगामाई मंदिर के प्रांगण में जनमेदिनी को संबोधित करते हुए डॉ. त्रिपाठी ने कहा– अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने राष्ट्र के नाम चुनाव शुद्धि का संदेश दिया है। लोकतंत्र का पर्व है चुनाव और इस चुनाव को सात्विक तरीके से सम्पन्न करना सभी भारतवासियों

अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान

भारत इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र की रीढ़ है चुनाव। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए चुनाव-प्रणाली का स्वस्थ होना जरूरी है। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान द्वारा इस सच्चाई की ओर ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। चुनाव में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए जो प्रयत्न किया जा रहा है, उसका मूल्य स्पष्ट है।

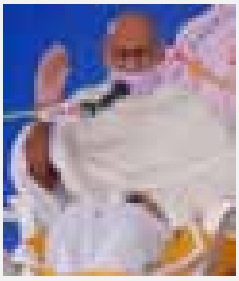

बीदासर, 23-03-2009 **आचार्य महाप्रज्ञ**

राष्ट्रव्यापी अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान

का कर्त्तव्य है। उपमंत्री सीताराम टेलर ने भय प्रलोभन रहित होकर अपने मताधिकार का उपयोग करने की प्रेरणा दी। उपमंत्री डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी ने सेवाभावी, स्वच्छ छवि, नशामुक्त, ईमानदार तथा जाति सम्प्रदाय से रहित प्रत्याशी को वोट देने की अपील की। कार्यकारिणी सदस्य रामकैलाश जोशी ने हर हालत में मताधिकार का उपयोग करने की सलाह दी। सदस्य जगमोहन माथुर ने सजग प्रहरी की तरह चुनाव शुद्धि के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति लाडनूं द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर वृहद् अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाया गया। चहुंओर से इस अभियान को समर्थन मिला। अभियान के तहत छोटी–छोटी संगोष्ठियां आयोजित कर मतदाताओं को स्वच्छ मतदान की दिशा में जागरूक कर इस कार्यक्रम को लोकव्यापी बनाया गया।

बीदासर : अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के दिशा–निर्देश एवं अणुव्रत समिति बीदासर के तत्वावधान में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का क्रम चुरू जिले एवं आसपास के क्षेत्रों में संचालन हुआ। अणुव्रत समिति बीदासर के अध्यक्ष चौथमल बोथरा के नेतृत्व में अणुव्रती कार्यकर्ता गांव–गांव गये और स्वस्थ मतदान हेतु अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का प्रचार किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता ने 29 मार्च 2009 को बीदासर में आयोजित सभा में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का श्रीगणेश किया। बीदासर में चुनाव शुद्धि रैली का आयोजन हुआ।

मुंबई : अणुव्रत समिति मुंबई एवं उपनगरीय समितियों के स्थानीय कार्यकर्ता महानगर में बड़े पैमाने पर स्वस्थ चुनावी वातावरण के प्रति आम जनता में जागरूकता की दृष्टि से सार्वजनिक संस्थाओं के सहयोग से कार्ययोजना बनाकर चुनाव शुद्धि अभियान संचालित किया गया। इसके तहत अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित चुनाव शुद्धि प्रक्रिया एवं साहित्य का बड़े पैमाने पर वितरण कर चुनाव शुद्धि संगोष्ठियां एवं छोटी–छोटी सभाओं के माध्यम से कार्य किया गया। मुंबई में चुनाव शुद्धि अभियान का संचालन व्यापक स्तर पर हुआ।

टिटिलागढ़ : टिटिलागढ़ (उड़ीसा) में ओमप्रकाश जैन के नेतृत्व में चलाये गये चुनाव शुद्धि अभियान को सार्थक बनाने की दिशा में आम मतदाताओं के बीच अधिक–से–अधिक चुनाव शुद्धि पेम्फलेटों का वितरण किया गया। अणुव्रत समिति एवं तेरापंथी सभा टिटिलागढ़ के तत्वावधान में नगर की सहयोगी संस्थाओं ने साथ मिलकर टिटिलागढ़, सिंधिकेला बंगामुंडा, कांटाबाजी, बेलापाड़ा, बलांगीर, तुषरा, सैथला, बेलगांव उत्केला बोर्डिया, नवरंगपुरा, तुषरा इत्यादि क्षेत्रों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान तथा साहित्य का वितरण कर मतदाताओं को जागरूक किया गया।

दिल्ली : 3 अप्रैल को अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत भवन में चुनाव शुद्धि अभियान के संदर्भ में संगोष्ठी आयोजित हुई। इस अवसर पर राजनीति में सांप्रदायिकता, जातपाँत, अपराध प्रवृत्ति में लिप्त इत्यादि मुद्दों पर गहन चर्चा हुई। संगोष्ठी में सरोज सिपानी–विवेक विहार, संतोष तातेड़–कड़कड़डुमा, सालू सोनी–विवेक विहार, राज गुनेचा–कृष्णानगर, वसंत नारायण– सिविल लाइन्स, उत्तम कुमार अग्रवाल–भारत गौ सेवक समाज दिल्ली, निरोतीलाल अग्रवाल–केन्द्रीय रामालिंग गौरक्षा नई दिल्ली, रामानदं यादव–केन्द्रीय कार्यालय विहिप नई दिल्ली, आलोक कुमार गुप्ता–मयूर विहार दिल्ली, विक्रम सिंह रावत– मोतीबाग, गोविंदसिंह रौतेला– मोती बाग, भगवती प्रसाद पुरी–नई दिल्ली, रजनीकांत शर्मा–शाहदरा, श्याम बिहारी गुप्ता–कामधेनु संवर्धन एवं अनुसंधान केन्द्र झांसी, पुष्पा शर्मा–अखिल भारतीय सर्वदलीय गौरक्षा महाभियान दिल्ली, मुरलीधर कांठेड–दिल्ली, प्रो. एम.एम. बजाज– चांसलर इंटरनेशनल कामधेनु अहिंसा यूनिवर्सिटी, सुरेश चंद्र दीक्षित– दिल्ली, आर.पी. ध्यानी–संपादक शैल सवेरा समाचार पत्र दिल्ली, भू त्यागी भारतीय–गाजियाबाद, धनंजय सिंह–प्रबंध संपादक तीसरा स्वाधीनता स्वर दिल्ली, भावना त्यागी–संपादक तरंग दर्शन शकरपुर दिल्ली, लक्ष्मण राव–साहित्यकार दिल्ली, विजय राज सुराणा–दिल्ली, डॉ. बी.एन. पांडेय– दिल्ली, बाबूलाल गोलछा–दिल्ली, डॉ महेन्द्र कर्णावट–राजसमंद इत्यादि ने भाग लिया।

चुनाव शुद्धि के संदर्भ में अणुव्रत आंदोलन की ओर से 15 अप्रैल 2009 को एक ज्ञापन अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री डॉ. बी.एन. पांडेय एवं विजय गोयल ने राष्ट्रपति को दिया। अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री, स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पांडेय दिल्ली के नेतृत्व में चुनाव शुद्धि अभियान राजधानी दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में एक माह तक चलाया गया। विद्यालयों एवं मुख्य चौराहों पर चुनाव शुद्धि अभियान साहित्य का वितरण कराया गया। 17 अप्रैल 2009 को जंतर– मंतर, मंडी हाउस, कनॉट प्लेस और कनॉट सर्कस क्षेत्र के मुख्य चौराहों एवं दुकानदारों को अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट एवं प्रचार–प्रसार साहित्य का वितरण किया। अजय झा ने दिल्ली क्षेत्र के मुख्य चौराहों और स्थानों पर जाकर अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट का वितरण किया। लक्ष्मीनगर, शकरपुर, राजघाट, बस अड्डा, कश्मीरी गेट एवं नांगलोई क्षेत्र के मुख्य चौराहों एवं बस्तियों में भी अणुव्रत चुनाव शुद्धि साहित्य का वितरण किया। 23–24 अप्रैल को दिल्ली के समीप उत्तरप्रदेश की सीमा में प्रवेश कर राजेन्द्र नगर, सूर्यनगर, साहिबाबाद, मोहननगर, अर्थला में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत मतदाताओं को स्वस्थ एवं स्वच्छ मतदान हेतु चुनाव शुद्धि पेम्फलेटों का वितरण किया गया। गंगासहाय ने अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के तहत अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट एवं प्रचारात्मक साहित्य गाजीपुर, खिचड़ीपुर, कल्याणपुरी व समीप के अन्य मुख्य स्थानों, चौराहों तथा बस्तियों में बांटकर मतदाताओं को स्वच्छ मतदान हेतु जागरूक किया। 26–27 अप्रैल को एल.आर. भारती एवं सतेन्द्र भारद्वाज ने आई.टी.ओ. चौराहा, दिल्ली गेट चौराहा, तिलक ब्रिज रेलवे स्टेशन, चांदनी चौक एवं कश्मीरी गेट बस अड्डे पर सायंकाल पैदल यात्रियों, डीटीसी बस के यात्रियों, ऑटो रिक्शा के यात्रियों तथा दिल्ली में

बाहर से आए रेल यात्रियों के बीच अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट वितरित किये। 25 अप्रैल को पटपड़गंज क्षेत्र बावा पेलेस में आयोजित उद्यमियों की 20वीं वार्षिक साधारण बैठक में बाबूलाल गोल्छा ने भाग लेकर उपस्थित लगभग 300 उद्यमियों के बीच अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेटों का वितरण कराया। इस बैठक में दिल्ली के महापौर डॉ. कंवरसेन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। 26 अप्रैल को नौएडा (उ.प्र.) में चुनाव शुद्धि अभियान को गति देने के क्रम में नौएडा निवासी आर.के. भंसाली ने अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेटों को मतदाताओं के मध्य वितरित करवाए।

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष दानचंद बाफना ने सुखदेव विहार के विभिन्न मुख्य चौराहों और बस्तियों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का क्रम चलाया। डॉ. बी. एन. पांडेय ने अपने आवासीय क्षेत्र हरदेव नगर, बुराड़ी इत्यादि क्षेत्रों के मुख्य चौराहों एवं बस्तियों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि साहित्य का वितरण कराया। डॉ. बी.एन. पांडेय ने राष्ट्रीय सुधार संगठन, भारत गौ सेवक समाज, कामधेनु विश्वविद्यालय, मानव मिशन, जनजागरण अभियान के संयुक्त सहयोग से दिल्ली से लखनऊ के रास्ते रायबरेली संसदीय क्षेत्र में अणुव्रत चुनाव शुद्धि के पेम्फलेटों का वितरण किया। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के तहत डॉ. बी.एन. पांडेय, प्रो. मदनमोहन बजाज, सुखबीर सिंह सैनी, उत्तम अग्रवाल ने लगभग 1275 किलोमीटर सड़क मार्ग पर पड़ने वाले गांवों, चौराहों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, बाजार, बस स्टेण्ड आदि में पोस्टर लगाये तथा अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेटों का वितरण किया। सबसे अधिक समय रायबरेली संसदीय क्षेत्र के प्यारेपुर, अजरेजुआ, काना, सब्जीमंडी, पापुरभंग एवं बरगद चौराहों पर आम सभा का आयोजन किया। इसी दौरान प्रियंका गांधी से एक सभा में इन कार्यकर्ताओं का सामना हुआ। स्थानीय मित्रों ने अणुव्रत चुनाव शुद्धि के पेम्फलेट उन्हें दिये एवं डॉ. बी.एन. पांडेय का परिचय दिया। इस अवसर पर प्रियंका गांधी ने डॉ. पांडेय के चरण स्पर्श किये और आशीर्वाद मांगा। तब डॉ. बी.एन. पांडेय ने कहा कि आशीर्वाद आप मुझे दें और चुनाव शुद्धि का आचरण अपनायें। साथ ही यहां के

हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा चुनाव शुद्धि अभियान

संसदीय क्षेत्र के प्रत्येक गांव में जहां 5 की संख्या में शराब की दुकान हैं उनमें से 4 दुकानें समाप्त करके उसकी संख्या एक करा दें। प्रियंका गांधी ने कहा कि इस ओर प्रयास किया जाएगा।

हिसार : हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन के नेतृत्व में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाया गया। कार्यक्रम के तहत शहर के विभिन्न स्थानों पर अणुव्रत चुनाव शुद्धि प्रचार–प्रसार साहित्य का वितरण किया गया एवं लोगों को स्वस्थ मतदान हेतु जागरूक किया गया। इसी क्रम में नगोरी गेट के बाहर हजारों लोगों में जागरूकता हेतु अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट बांटे गए। समाचार पत्रों के माध्यम से एवं पेम्फलेटों के द्वारा जनता को जागरूक किया गया। बलराज सिंगला, जैनेन्द्र कुमार जैन, यशवंत जैन, अनिल जैन, प्रमोद जैन, अनिल जैन एवं रूपेन्द्र गोयल के सहयोग से हिसार में चुनाव शुद्धि अभियान संचालित हुआ।

केसिंगा : तेरापंथी सभा केसिंगा (उड़ीसा) के सौजन्य से अणुव्रत चुनाव शुद्धि परिपत्रों का 15 हजार की संख्या में पुनर्मुद्रण कराया गया एवं कार्यकर्ताओं ने समीपवर्ती ग्राम्य अंचलों–तअसरि, कन्तेशीर, कुरलुपाड़ा, सुकुनाभटा, कसुरपाडा, बिनेकला, घाटपाडा, विजखमन, तुलीखमण, सुयापाली, बेलखडी, रिषडा, बेलपाडा, तुन्डला, जोराडोबरा, कोन्डाबन्द पलम, रामपुर, किनेटकला, कुपडा, कुपडारोड, नरलारोड, देपुर, दासिंगा, भवानीपटना, पास्टीगुडी, चांचेर, गायगांव, उतकला, बोरिया, जोलको एवं पूरे केसिंगा नगर में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाया गया। इसके अलावा टिटिलागढ़, सिंधीकेला, बंगुमुंडा, कांटाबाजी इत्यादि सभाओं द्वारा भी पेम्फलेटों का वितरण कराया गया। मुख्य स्थानों पर तीनों ही पेम्फलेटों में प्रकाशित अणुव्रत चुनाव शुद्धि सामग्री के होर्डिंग्स बनवाकर लगवाए गए। सभाध्यक्ष रामनिवास जैन ने इस हेतु स्थानीय कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से प्रेरित किया गया।

उदयपुर : अणुव्रत समिति उदयपुर के कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्पलेट, पोस्टर एवं अन्य प्रचारात्मक साहित्य एक समारोह में जारी किए। स्थानीय समाचार पत्रों ने इन पोस्टरों का उल्लेख करते हुए अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को गति देने से सम्बन्धित समाचारों को मुख्य रूप से प्रकाशित किया।

मंड्या–कर्नाटक : अणुव्रत समिति मंड्या नगर, कर्नाटक के तत्वावधान में एम. शांतिलाल जैन (आच्छा) के नेतृत्व में नगर की सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर वृहद स्तर पर अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाया एवं स्थान–स्थान पर चुनाव शुद्धि बैनर्स लगाये गये एवं अन्य गांवों–नगरों में भेजे गये।

गाजीपुर : अणुव्रत समिति गाजीपुर के अध्यक्ष नरेन्द्र कुमार राय के नेतृत्व में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान बड़े पैमाने पर चलाया गया। उन्होंने चुनाव शुद्धि की सफलता हेतु कई कार्यक्रम आयोजित करवाए। साथ ही लोगों को समझाया कि झूठे लोभ एवं प्रलोभन में आकर मतदान न करें तथा निर्भय होकर एवं बिना किसी लालच–प्रपंच के तथा निडर होकर मतदान करें।

पटना : अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र पटना ने अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को गति दी। सौरव आचार्य एवं चंडीगढ़ से पहुंची विजय गोयल की टीम के सहयोग से पटना और आसपास के शहरों और गांवों में अणुव्रत आंदोलन की अवधारणा को कार्यान्वित किया गया। चुनाव शुद्धि पेम्फलेट / पोस्टरों को मतदाताओं के बीच वितरित किया गया। मोहल्लों में सभाएं आयोजित की गयी। मतदाताओं ने भारी उत्साह के साथ अणुव्रत आंदोलन द्वारा उठाये गये इस कदम को सराहनीय बताया।

छत्तीसगढ़ : अणुव्रत समिति गुहाननाला के अध्यक्ष मायाराम नागवंशी ने पूरे आदिवासी क्षेत्र में गोडवाना विकास समिति के सहयोग से चुनाव शुद्धि अभियान चला कर सांप्रदायिकता शराब और धनबल को ध्वस्त करने के क्रम में क्षेत्रीय मतदाताओं को जागरूक करने का बीड़ा उठाया। क्षेत्र में पूरे उत्साह और लगन के साथ चरित्रसंपन्न एवं सेवाभावी प्रत्याशियों को संसद में भेजने की गुहार लगायी गयी। इस संदर्भ में अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट को घर–घर जाकर बांटा गया, ताकि मतदाताओं में जागरूकता आये और वे निर्भय होकर अपने मत का उपयोग कर सकें।

तेजपुर : अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित प्रचार सामग्री का असमी भाषा में पुर्नमुद्रण करा तेजपुर एवं निकटवर्ती बस्तियों में वितरण किया गया। अमृत सांसद दिलीप दूगड़ के प्रयासों से चुनाव शुद्धि पेम्फलेट का हिन्दी भाषा में छः हजार तथा असमी भाषा में छः हजार की संख्या में पुर्नमुद्रण कराकर कार्यकर्ताओं ने घर–घर जाकर इसका वितरण किया।

धुबड़ी : अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट का पांच हजार की संख्या में स्थानीय तेरापंथी सभा धुबड़ी (असम) ने पुर्नमुद्रण कराया और उन्हें प्रसारित कर मतदाताओं को स्वस्थ मतदान के प्रति जागरूक किया।

चित्तौड़गढ़ : डॉ. बी.एल. खाब्या के निर्देशन में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान संचालित हुआ। स्थानीय सहयोग से अणुव्रत प्रचार सामग्री का बीस हजार की संख्या में पुर्नमुद्रण कराया गया तथा नगर के मुख्य चौराहों पर ''आपके वोट का अधिकारी कौन'' होर्डिंग्स लगाये गये। दैनिक समाचार पत्रों में भी अणुव्रत प्रचार सामग्री को विज्ञापन के रूप में प्रकाशित कर मतदाताओं को स्वस्थ मतदान की प्रेरणा दी गई।

राजसमंद : अणुव्रत समिति राजसमंद एवं गांधी सेवा सदन की सहभागिता से अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को गति दी गई। जीतमल कच्छारा, गणेश बड़ाला, मदन धोका, आबिद अली, प्रकाश मेहता ने लावा सरदारगढ़, आमेट, केलवा, देवगढ़, भीम, चारभुजा, रेलमगरा, राजनगर, कांकरोली इत्यादि स्थानों की यात्रा कर जन जागरूकता की दिशा में प्रयास किया। अणुव्रत प्रचार सामग्री का दस हजार की संख्या में पुनर्मुद्रण कराया गया। अणुव्रत चुनाव सामग्री का प्रमुख स्थानों एवं चौराहों पर वितरण किया गया एवं नुक्कड़ सभाओं का आयोजन हुआ।

गांधी सेवा सदन राजसमंद द्वारा देवेन्द्र सभागार में 21 अप्रैल को पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के उद्देश्य को स्पष्ट किया। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान की विस्तृत व्याख्या करते हुए डॉ. कर्णावट ने कहा– आज भारतीय लोकतंत्र में 'तंत्र' हावी हो गया है– केन्द्र बिन्दु बन गया है और 'लोक' हाशिये पर आ गया है। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के द्वारा हम 'लोक' को पुनः केन्द्र बिन्दु पर लाने का प्रयास कर रहे हैं जो लोकतंत्र की आत्मा है। पत्रकार वार्ता में राजस्थान पत्रिका, भास्कर, नवज्योति, प्रातःकाल दैनिक के संवाददाता तथा इलेक्ट्रोनिक मीडिया ई. टी. वी., एसडी.टी.वी., एनडी टी.वी. के प्रतिनिधि उपस्थित थे। पत्रकार वार्ता में अणुव्रत समिति राजसमंद के अध्यक्ष जीतमल कच्छारा, गांधी सेवा सदन के प्रबंध मंत्री आबिद अली तथा गांधी सेवा सदन के विद्यार्थी उपस्थित थे।

अणुव्रत चुनाव रथ के साथ अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट, कार्यसमिति सदस्य जीतमल कच्छारा एवं गांधी सेवा सदन राजसमंद के लोककर्मी आबिद अली, ब्रजेश वर्मा, नरोत्तम आत्रेय, विजय किशोर त्रिपाठी, गणेश पालीवाल, चम्पालाल लौहार तथा अणुव्रती कार्यकर्ता गणेश बड़ाला, मदन धोका (राजसमंद), प्रकाश मेहता, ईश्वरलाल, उत्तमचंद सुकलेचा (देवगढ़) इत्यादि जनों ने ग्राम्य अंचलों का दौरा कर अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेट–पोस्टर का वितरण किया एवं नुक्कड़ सभाएं कर स्वस्थ मतदान के प्रति जागरूकता पैदा की।

जालना : अणुव्रत समिति जालना, अमृत सांसद, तेरापंथी सभा, महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाया गया। इसके तहत 11 हजार अणुव्रत चुनाव शुद्धि पेम्फलेटों का पुनर्मुद्रण कराकर मतदाताओं के मध्य वितरण किया गया। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत अनेक स्थानों पर अणुव्रत चुनाव शुद्धि के होर्डिंग्स बोर्ड लगवाये गये। फूल बाजार में एक होर्डिंग्स का उद्घाटन डॉ. संजय अंबेकर, डॉ. राजेश सेठिया, अमृत सांसद महावीर धारीवाल, सभा अध्यक्ष सुरेश सेठिया, अणुव्रत सेवी रतनीदेवी सेठिया, महिला मंडल की कमला बाई सेठिया, उर्मिला पिपाडा के हाथों हुआ। प्रत्यक्ष रूप से मतदाताओं से संपर्क किया गया व बाजार एवं मुख्य चौराहों पर होर्डिंग्स लगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य 'अमृत सांसद' महावीर धारीवाल ने अपनी टीम के साथ सक्रियता का परिचय देते हुए किया।

जोधपुर : अणुव्रत समिति जोधपुर के कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का संचालन जोर–शोर से किया गया। इस दौरान शहर के विभिन्न स्थानों पर अणुव्रत चुनाव शुद्धि प्रचार–प्रसार साहित्य का वितरण किया गया एवं लोगों को स्वस्थ मतदान हेतु जागरूक किया गया। स्थान–स्थान पर सभाओं एवं संगोष्ठियों के माध्यम से जनता को स्वस्थ मतदान हेतु जागरूक किया गया। चुनाव शुद्धि अभियान की सफलता में पूर्व अध्यक्षा डॉ. कृष्णा मोहनोत एवं वर्तमान अध्यक्ष घेवरचंद बोहरा तथा समिति के सभी कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को गति देने हेतु अणुव्रत महासमिति ने तीन लाख से भी ऊपर की संख्या में पेम्फलेट मुद्रित करवाकर स्थान–स्थान पर निःशुल्क प्रेषित किये। अणुव्रत आंदोलन की इस विचार क्रांति ने जनता के मध्य जो लौ प्रज्वलित की उससे देश के अनेक भागों में लोकतंत्र की मजबूती के लिए लोगों ने अपराधों में लिप्त उम्मीदवार को नकारने तथा सांप्रदायिकता और जातिवाद से ऊपर उठने के लिए अपनी आवाज बुलंद की।

अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला मुम्बई में मंच मनीषा

❑ अणुव्रत विचार मंच

आलोच्य वर्ष में अणुव्रती कार्यकर्ताओं से संपर्क साधने एवं उन्हें प्रशिक्षित करने की दृष्टि से अणुव्रत मंच प्रवृत्ति के अंतर्गत अणुव्रत सम्मेलन, शिविर, गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया–

● बैंगलोर में 8 अक्टूबर 2008 को कर्नाटकव्यापी अणुव्रत सम्मेलन का कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा आयोजन किया गया। इसमें कर्नाटक राज्य के गृहमंत्री वी.एस. आचार्य एवं अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट क्रमशः प्रमुख अतिथि एवं अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

● बीदासर में 1, 2 मार्च 2009 को अणुव्रत आंदोलन के 61वें स्थापना दिवस पर अणुव्रत समिति बीदासर के सहयोग से अणुव्रत महासमिति द्वारा द्विदिवसीय अणुव्रत शिविर का आयोजन। अणुव्रत शिविर में 118 अणुव्रती पदाधिकारी–कार्यकर्ताओं की भागीदारी रही। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के तीस कार्यकर्ताओं की शिविर में विशेष उपस्थिति रही। शिविर में चर्चा मुख्यतः ''अणुव्रत की भावी दिशाएं'' विषय पर केन्द्रित रही। शिविर में मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल, मुनि पीयूषकुमार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

● मुम्बई में 8 मार्च 2009 को अणुव्रत समिति मुम्बई के सहयोग से एक दिवसीय अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला में मुम्बई नगर की नवगठित 11 अणुव्रत उपसमितियों के 130 से अधिक कार्यकर्तागण उपस्थित थे। शिविर में साहित्यकार विश्वनाथ सचदेव, प्रो. हुबनाथ पांडे, हस्तीमल हस्ती, स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पांडेय, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट तथा मुम्बई अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों की प्रमुख उपस्थिति रही।

● अणुव्रत समितियों द्वारा स्थानीय स्तर पर अणुव्रत शिविर, संगोष्ठियों, सेमिनारों एवं सम्मेलन का आयोजन। अणुव्रत विषयपरक, वादविवाद, संगीत, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं का स्थान–स्थान पर आयोजन।

● अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति की सदस्या श्रीमती राज गुनेचा के सक्रिय प्रयासों से नवम्बर 2008 से प्रत्येक माह में दिल्ली के विभिन्न भागों में अणुव्रत मासिक संगोष्ठियों का आयोजन हुआ।

❑ अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

अणुव्रत आंदोलन न सम्प्रदाय है, न कोई परम्परा। असांप्रदायिक और शाश्वत धर्म है–अणुव्रत। इसके परिपार्श्व में चरित्र विकास, नैतिक और अहिंसक मूल्यों की पुनर्स्थापना का अभियान विगत 60 वर्षों से गतिशील है। अणुव्रत मानव जाति के विकास के लिए पथ–दर्शन है जिसकी शाश्वत अपेक्षा है। अणुव्रत कार्यक्रमों की शृंखला में इस वर्ष **अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी आयोजन अणुव्रत समितियों, सार्वजनिक संस्थाओं एवं तेरापंथी सभाओं के सहयोग से 5 सितंबर 09 से 11 सितंबर 09 तक हुआ।** अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का राष्ट्रव्यापी क्रम निम्नानुसार रहा–

5 सितंबर 2009	**: सांप्रदायिक सौहार्द दिवस**
6 सितंबर 2009	**: अहिंसा दिवस**
7 सितंबर 2009	**: अणुव्रत प्रेरणा दिवस**
8 सितंबर 2009	**: पर्यावरण शुद्धि दिवस**
9 सितंबर 2009	**: नशामुक्ति दिवस**
10 सितंबर 2009	**: अनुशासन दिवस**
11 सितंबर 2009	**: जीवन विज्ञान दिवस**

अणुव्रत समिति भिवानी द्वारा आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में चिकित्सकगण, सुरेन्द्र जैन, रमेश बंसल एवं अन्य

❑ नशामुक्ति अभियान

गांवों–नगरों में नशामुक्ति अभियान का संचालन अणुव्रत महासमिति के निर्देशन में अणुव्रत समितियों द्वारा किया गया। इसके अंतर्गत विद्यालयों में नशामुक्ति पर प्रेरक वक्तव्य, विद्यार्थी– शिक्षक वर्गीय अणुव्रतों का वाचन, नशामुक्ति संकल्प, अणुव्रत गीत संगान, प्रचारात्मक साहित्य वितरण इत्यादि का क्रम रहा। अणुव्रत समितियों द्वारा आदर्श वाक्यों का भित्ति अंकन गांवों–नगरों में किया गया। बीदासर, सवाई माधोपुर, बैंगलोर, लाडनूं, गंगापुर, आसीन्द, जोधपुर, जयपुर, सायरा इत्यादि अणुव्रत समितियों द्वारा नशामुक्ति अभियान का प्रभावी संचालन किया गया।

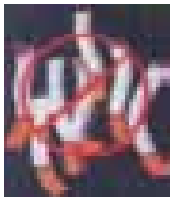

❑ संगठनात्मक गतिविधियां

अणुव्रत महासमिति के संगठनात्मक पक्ष के प्रमुख अंग है–प्रादेशिक अणुव्रत समिति, जिला अणुव्रत समिति एवं स्थानीय अणुव्रत समिति। वर्तमान में अणुव्रत महासमिति से निम्न 198 अणुव्रत समितियां पंजीकृत हैं–

प्रादेशिक अणुव्रत समिति 7
जिला अणुव्रत समिति 13
स्थानीय अणुव्रत समिति 174
भारत से बाहर अणुव्रत समिति 3
सर्व योग = 197

विभिन्न राज्यों एवं नेपाल में अणुव्रत समितियों की संख्या निम्नानुसार है–

आन्ध्र प्रदेश	:	2	आसाम	:	2
बिहार	:	29	चंडीगढ़	:	1
छत्तीसगढ़	:	13	दिल्ली	:	4
गुजरात	:	6	हरियाणा	:	18
इम्फाल	:	2	झारखंड	:	6
कर्नाटक	:	3	मध्यप्रदेश	:	3
महाराष्ट्र	:	6	उड़ीसा	:	4
पंजाब	:	16	राजस्थान	:	64
तमिलनाडु	:	4	उत्तरप्रदेश	:	1
पं. बंगाल	:	10	नेपाल	:	3

● अणुव्रत समिति मुम्बई के नेतृत्व में मुम्बई महानगर में 11 अणुव्रत उपसमितियों की स्थापना की गयी तथा सैकड़ों कार्यकर्ताओं को अणुव्रत समिति मुम्बई से जोड़ा गया, ताकि महानगर में अणुव्रत विचार शरणी को जन–जन तक प्रसारित किया जा सके। राजस्थान में 2 नई अणुव्रत समितियों का गठन हुआ।

● अणुव्रत समितियाँ स्थानीय स्तर पर अणुव्रत दर्शन को प्रचारित-प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अणुव्रत समितियों को सक्रिय करने एवं निरंतर गतिशीलता बनाये रखने की दृष्टि से प्रांतीय एवं केन्द्रीय पदाधिकारियों ने हरियाणा, बिहार, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, महाराष्ट्र, तामिलनाडु, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश राज्यों की संगठन यात्राएं आलोच्य वर्ष में की गयी।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट : बैंगलोर, उदयपुर, आसीन्द, गंगापुर, पुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़, बीदासर, जयपुर, मुम्बई, बारडोली, सूरत, दिल्ली, न्यू मुम्बई, ठाणे, चैन्ने।

जी.एल. नाहर : राणावास, उदयपुर, अजमेर, बालोतरा, असाड़ा, जसोल, पचपदरा, ब्यावर, बीकानेर, किशनगढ़, जोधपुर, पाली, सिरियारी, बगड़ी, अहमदाबाद, मुम्बई, राजसमंद, कोटा, बाड़मेर।

विजयराज सुराणा : छापर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पटना, पड़िहारा, लाडनूं, सुजानगढ़, दिल्ली।

मगन जैन : दिल्ली, रायपुर, टिटिलागढ़।

डॉ. बी.एन. पांडेय : राजसमंद, बाढ़, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, पटना, रायबरेली, लखनऊ, मुंबई, जयपुर।

बाबूलाल गोलछा : बीदासर, लाडनूं, चुरू, रतनगढ़, दिल्ली।

● दिल्ली, कर्नाटक, राजस्थान एवं हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समितियों के आंचलिक सम्मेलन इस वर्ष आयोजित हुए।

अणुव्रत अनुशास्ता 'अणुव्रत महारथी' ग्रंथ का लोकार्पण करते हुए

❑ प्रकाशन

अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने की दृष्टि से अणुव्रत महासमिति द्वारा वृहद् एवं प्रचारात्मक साहित्य का प्रकाशन हुआ। इस वर्ष निम्न साहित्य एवं परिपत्रों का प्रकाशन किया गया–

- **जीवनी**
  1. अणुव्रत महारथी : देवेन्द्र कुमार कर्णावट (पृष्ठ 500 : 1000 प्रतियां)
- **लघु पुस्तिकाएं**
  1. पर्यावरण संरक्षण : श्वेत–श्याम (5000 प्रतियां)
- **परिपत्र**
  1. नशामुक्ति अभियान : श्वेत–श्याम 12000 प्रतियां
  2. लोकतंत्र और चुनाव : श्वेत–श्याम 12000 प्रतियां
- **पोस्टर**
  1. आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन (बहुरंगी : 10000 प्रतियां)
  2. मतदाता ध्यान दें बहुरंगी 10000 प्रतियां
  3. मतदाताओं से बहुरंगी 10000 प्रतियां
- **पेम्फलेट**
  1. अमूल्य वोट का अधिकारी कौन (बहुरंगी : 600000 प्रतियां)
  1. मतदाता ध्यान दें : द्विरंगी 120000 प्रतियां
  2. मतदाताओं से : श्वेत–श्याम 65000 प्रतियां
  3. अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह : द्विरंगी 16000 प्रतियां

अणुव्रत आंदोलन के आविर्भाव काल में नींव के पत्थर के रूप में कार्य किया स्व. श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने। अणुव्रत महारथी की जीवनी का अणुव्रत महासमिति ने प्रकाशन कर अपने पूर्वजों के ऋण से मुक्ति की दिशा में एक कदम बढ़ाया है। ग्रंथ का संपादन अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. छगनलाल शास्त्री एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने किया एवं इसका लोकार्पण अणुव्रत आंदोलन की षष्ठीपूर्ति के अवसर पर बीदासर में अणुव्रत अनुशास्ता ने किया। ग्रंथ बहु प्रशंसित बना यही हमारे आत्मतोष का बिन्दु है। **पुस्तक प्रकाशन में श्रीमती हुलास देवी भादानी पुत्र श्री कमलेश भादानी एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति का अर्थ सौजन्य प्राप्त हुआ।**

अणुव्रत के लौहपुरुष एवं अणुव्रत महारथी पुस्तक के प्रसार में श्री मूलचंद नाहर बैंगलोर तथा गांधी सेवा सदन राजसमंद का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

- **अणुव्रत कलेण्डर**

अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक प्रचारित करने की दृष्टि से अणुव्रत कलेण्डर-2009 का प्रकाशन इस वर्ष चैन्ने निवासी श्री जुगराज-शांतादेवी नाहर के सौजन्य से उनके पिताश्री-मातुश्री भेरूलाल-फूलीबाई नाहर की स्मृति में किया गया। नशा से संबंधित बाल कलाकार– अमृता कांठेड़ नई दिल्ली की बाल कलाकृति से अणुव्रत कलेण्डर सुसज्जित हुआ। कलेण्डर की 10000 प्रतियां मुद्रित हुई एवं निःशुल्क वितरित की गयी।

अणुव्रत अनुशास्ता के हाथों अणुव्रत कलेण्डर-2009 का विमोचन

जयपुर में त्रिदिवसीय 59वां अणुव्रत अधिवेशन

अणुव्रत अनुशास्ता अणुव्रत पाक्षिक का अवलोकन करते हुए

अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान एवं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में 59 वां त्रिदिवसीय अणुव्रत अधिवेशन जयपुर (राजस्थान) में 7, 8, 9 नवम्बर 2008 को आयोजित हुआ। अणुव्रत अधिवेशन में अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्व भारती, प्रादेशिक- जिला-स्थानीय अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अणुव्रत अधिवेशन का उद्घाटन अणुव्रत अनुशास्ता ने किया। अधिवेशन में मोहन भाई संस्थापक अणुविभा, पद्मश्री कैलाश अग्रवाल संस्थापक नारायण सेवा संस्थान उदयपुर, डॉ. सोहनलाल गांधी अध्यक्ष अणुविभा, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड पटना के अध्यक्ष सिद्धेश्वर प्रसाद, साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', सिद्धराज भंडारी, डॉ. बी.एन. पांडेय, बालूभाई पटेल, प्रो. कृष्णा मोहनोत, ठाकरमल सेठिया, स्वामी श्यामानंद गिरि दिल्ली, गो सेवक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुखबीर सिंह सैनी एवं राजेन्द्र बरड़िया की प्रमुख उपस्थिति रही। अधिवेशन में 124 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अधिवेशन के उद्घाटन सत्र के अणुव्रत चुनाव शुद्धि पोस्टर एवं अणुव्रत कलेन्डर 2009 का लोकार्पण किया गया। शिक्षण संस्थाओं में तम्बाकू सेवन के विरोध में संदेश देने के लिए अणुव्रत कलेण्डर 2009 का प्रकाशन चैन्नई निवासी जुगराज नाहर के पूर्ण अर्थ सौजन्य से उनके पिताश्री—मातुश्री की स्मृति में किया गया है। मुनि सुधाकर ने अणुव्रत के संदर्भ में विचार व्यक्त किये। मोहनभाई ने अपनी वेदना को व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र का संयोजन मगन जैन ने किया।

अणुव्रत महासमिति की साधारण सभा 7 नवम्बर 2008 को मध्याह्न में आयोजित हुई। डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने साधारण सभा की अध्यक्षता की। संस्था के महामंत्री मगन जैन ने गति-प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

अणुव्रत अधिवेशन में आगत सर्व प्रतिनिधियों को चुनाव अभियान सामग्री एवं अणुव्रत कलेण्डर 2009 वितरित किये गये। मगन जैन, विजयराज सुराणा, संचय जैन, प्रेमसिंह चौधरी, जी.एल. नाहर ने विभिन्न सत्रों का संचालन किया। वरिष्ठ समाजसेवी सिद्धराज भंडारी जयपुर ने अणुव्रत महासमिति को अंग्रेजी साहित्य प्रकाशन, वेबसाइट एवं विदेशों में सम्पर्क हेतु पच्चीस हजार रुपए का अनुदान दिया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा विगत वर्ष में अणुव्रत प्रवक्ता संबोधन से अलंकृत डॉ. महेन्द्र कर्णावट को 'अणुव्रत प्रवक्ता' प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष अणुव्रत प्रवक्ता स्व. श्री सीताशरण शर्मा की स्मृति में वर्ष 2008 के लिए अणुव्रत समिति उदयपुर, अणुव्रत समिति आसीन्द को श्रेष्ठ अणुव्रत समिति सम्मान डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने प्रदान किया। दोनों अणुव्रत समितियों को सम्मान प्रतीक एवं सम्मान राशि भेंट की गई।

59 वें अणुव्रत अधिवेशन की आयोजना में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति, अणुव्रत समिति जयपुर एवं आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति जयपुर का आत्मीय सहयोग रहा। सर्वश्री अविनाश नाहर, आशा नीलू टांक, राजकुमार बरड़िया, राजेन्द्र बरड़िया, महेन्द्र जैन, संचय जैन जयपुर, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी. एल. नाहर, अणुव्रत महासमिति के कार्यकर्ता एल.आर. भारती, एस. भारद्वाज, अजय झा, गंगा सहाय, नथमल नाहटा का अणुव्रत अधिवेशन की समायोजना में पूर्ण सहयोग रहा। **जयपुर के श्रद्धाशील सागरमल बरड़िया परिवार ने अणुव्रत अधिवेशन का सम्पूर्ण आवास-आतिथ्य एवं अन्य व्यय वहन कर अपने योगक्षेमी उत्तरदायित्व का निर्वहन किया। बरड़िया परिवार के इस आत्मीय सहयोग के प्रति अणुव्रत महासमिति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती है।**

अणुव्रत आंदोलन का 61वां स्थापना दिवस

अणुव्रत आंदोलन का षष्ठिपूर्ति के उपलक्ष्य में 1–2 मार्च 2009 को बीदासर में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति एवं अणुव्रत समिति बीदासर के संयुक्त तत्वावधान में द्विदिवसीय अणुव्रत शिविर का आयोजन हुआ। इसमें अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्व भारती एवं अणुव्रत समितियों के 130 पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

अणुव्रत पाक्षिक 1–15 अप्रैल 2009
कवर पृष्ठ 1 का फोटो

अणुव्रत आंदोलन का षष्ठीपूर्ति समारोह 1–2 मार्च 2009 को बीदासर (चुरू–राजस्थान) में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति एवं अणुव्रत समिति बीदासर के संयुक्त तत्वावधान में द्विदिवसीय अणुव्रत शिविर के साथ सम्पन्न हुआ। षष्ठीपूर्ति समारोह में अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्व भारती एवं अणुव्रत समितियों के पदाधिकारियों–कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। अणुविभा के संस्थापक मोहनभाई, अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. छगनलाल शास्त्री, डॉ. धर्मेन्द्रनाथ अमन, जी.एल. नाहर, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अणुव्रत सेवी डॉ. हीरालाल श्रीमाली, भीकमचंद नखत, मगन जैन, डॉ. बी.एन. पांडेय, डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, राजेन्द्र सेठिया, संचय जैन, हंसराज जैन, सुरेन्द्र कुमार जैन, भंवरलाल मूंदड़ा, अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष विजयराज सुराणा, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोल्छा, उड़ीसा ठाकुर बाबा, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के मंत्री पंचशील जैन, बीदासर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चौथमल बोथरा, चुरू जिला अणुव्रत समिति की मंत्री पुष्पा मंडार इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

षष्ठीपूर्ति के अलभ्य अवसर पर अणुव्रत महारथी देवेन्द्रकुमार कर्णावट ग्रंथ तथा अणुव्रत पाक्षिक के विशेषांक ''अणुव्रत विचार क्रांति के छः दशक'' का लोकार्पण अणुव्रत अनुशास्ता के कर–कमलों से हुआ। अणुव्रत महारथी ग्रंथ का संपादन डॉ. छगनलाल शास्त्री एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने किया तथा इसके प्रकाशन में श्रीमती हुलास देवी भादानी, पुत्र श्री कमलेश भादानी तिरुपुर तथा राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति का अर्थ सौजन्य प्राप्त हुआ।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने 61वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा– अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी त्रैकालिक व्यक्तित्व के धनी थे। वे वर्तमान को भी समझते थे और भविष्य को भी देखते थे। अणुव्रत इसी दूरदर्शिता का परिणाम है। आचार्य तुलसी ने भविष्य को देखा और चिंतन किया कि देश की आजादी के साथ–साथ अब सत्ता और धन का खेल होने वाला है, जिससे बचाव के लिए एक मार्गदर्शक तत्त्व चाहिए। इस चिंतन से अणुव्रत का प्रारंभ हुआ जिसके विकास में कई कार्यकर्त्ताओं का श्रम एवं चिंतन रहा उनमें प्रमुख थे– जयचंदलाल दफ्तरी, देवेन्द्रकुमार कर्णावट, सुगनचंद आंचलिया, हनूतमल सुराणा, मोहनलाल कठौतिया, गोपीनाथ 'अमन', जैनेन्द्रकुमार, प्रभुदयाल डाबडीवाल, यशपाल जैन आदि। इन्होंने अनैतिकता के वातावरण में नैतिकता को अभिसिक्त करने का प्रयत्न किया। अर्थ और भोग में लिप्त व्यक्ति नैतिकता को स्वीकार करें, अणुव्रत को स्वीकार करें बहुत कठिन काम है। यदि यह कठिन नहीं होता तो आज बाजार भी शुद्ध होता, व्यापार भी शुद्ध होता, राजनीति भी शुद्ध होती, अपराध–हिंसा और भ्रष्टाचार जैसे शब्द सितारे बनकर नहीं चमकते। जो व्यक्ति दलदल में फंसा हुआ है उसके लिए चलना कठिन, दलदल से निकलना भी मुश्किल है। वर्तमान में अर्थ और भोग का भयंकर दलदल है उससे निकलकर अणुव्रती बनना कठिन तपस्या है। जो व्यक्ति नैतिकता को, अणुव्रत को स्वीकार करता है और अर्थार्जन में अनैतिकता का व्यवहार नहीं करता, क्रूरता का व्यवहार नहीं करता, वह अणुव्रत के साथ–साथ महाव्रत को भी स्वीकार करता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने समागत कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा–वर्तमान वातावरण में सबसे अधिक प्रासंगिक धर्म है–अणुव्रत। वर्तमान की जो समस्याएं हैं उनका समाधान कोई सम्प्रदाय नहीं वरन् अणुव्रत ही दे सकता है। अतः अणुव्रत के सभी कार्यकर्ता, प्रवक्ता, पदाधिकारी इस पर गहराई से चिंतन करें और नैतिक मूल्यों के विकास की एक ऐसी योजना बनाएं जिससे समाज का दृष्टिकोण सही बन सकें।

बीदासर में आयोजित अणुव्रत शिविर का दृश्य

स्थापना दिवस समारोह का प्रारंभ नीरज मुनि द्वारा संगायित अणुव्रत गीत से हुआ। अणुव्रत समिति बीदासर के अध्यक्ष चौथमल बोथरा ने समागत प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा– अणुव्रत की षष्ठीपूर्ति का समारोह ऐतिहासिक भूमि बीदासर में हो रहा है यह हमारे लिए गौरवपूर्ण है। समागत अणुव्रत परिवार का भावभरा स्वागत अभिनंदन। प्रवास व्यवस्था समिति बीदासर के अध्यक्ष बाबूलाल सेखानी ने स्वागत करते हुए कहा–अणुव्रत आंदोलन की साठ वर्षों की यात्रा नैतिक मूल्यों के जागरण की यात्रा है जिसने पूरे देश में विचारक्रांति की है।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. एल. गांधी ने स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा–अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी युग को पहचानते थे। अणुव्रत आंदोलन तुलसी की इसी दूरदर्शिता का परिणाम है जिसने जन–जन में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था पैदा की। अणुव्रत के पहले कार्यकर्ता देवेन्द्र भाई कर्णावट ने मुझमें अध्यात्म के प्रति रुचि पैदा की। उसी का परिणाम है कि आज मैं अणुव्रत के प्रति पूर्णतया समर्पित हूं। देवेन्द्रभाई कल्पनाकार, योजनाकार, प्रेरणादीप थे। उन्होंने अनेकों कार्यकर्ताओं को अणुव्रत के प्रति प्रेरित किया।

राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी.एल. नाहर ने कहा– अणुव्रत का 61 वां स्थापना दिवस हमारा आह्वान कर रहा है कि हम सभी पुनः नई योजना–कार्यक्रम के साथ समाज निर्माण के कार्य में जुट जायें। अणुव्रत दर्शन को जीवन में उतार कर हम सभी समाज के समक्ष आदर्श उपस्थित करें।

61 वें स्थापना दिवस के द्विदिवसीय समारोह को अणुव्रत प्राध्यापक मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल, डॉ. एस.एल. गांधी, डॉ. छगनलाल शास्त्री, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, राजेन्द्र सेठिया, डॉ. धर्मेन्द्रनाथ अमन, डॉ. बी.एन. पांडेय, डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', संचय जैन, जी.एल. नाहर, विजयराज सुराणा ने संबोधित किया तथा संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने अपनी ओजस्वी वाणी में अणुव्रत इतिहास की संक्षिप्त प्रस्तुति के साथ किया। प्रवास व्यवस्था समिति तथा अणुव्रत समिति बीदासर की द्विदिवसीय आयोजना में पूर्ण सहभागिता रही।

अणुव्रत महासमिति वेबसाइट : anuvratinfo.org

अणुव्रत महासमिति की वेबसाइट **anuvratinfo.org** पंजीकृत एवं प्रारंभ हो चली है। इसके विषयक्रम में अणुव्रत आंदोलन के इतिहास, अणुव्रत दर्शन, आचार संहिता, अणुव्रत गीत, अणुव्रत प्रवर्तक, अणुव्रत अनुशास्ता, प्रतिध्वनि, अणुव्रत महासमिति : परिचय एवं प्रवृत्तियां, अणुव्रत संबोधन–पुरस्कार, अणुव्रत साहित्य, फोटो, सहयोगी संस्थान, अणुव्रत पाक्षिक प्रमुख हैं। वेबसाइट हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है। इसके निर्माण में अणुव्रत प्रचेता श्री सिद्धराज भंडारी जयपुर की प्रेरणा एवं अर्थ सहयोग मुख्य रहा है। अंग्रेजी भाग का अनुवाद एवं संपादन डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' जयपुर एवं हिन्दी भाग का संपादन डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने किया है। इसकी साज–सज्जा एवं निर्माण सर्वश्री एम.डी. कांठेड़, अभिषेक कांठेड़ एवं ललित गर्ग के हाथों हुआ। नवम्बर 2009 माह से अणुव्रत पाक्षिक का प्रत्येक अंक हिन्दी भाषा में इस वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगा।

नशाखोरी हराम, स्मोकिंग पर फतवा

मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया... हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया.... गाने के बोल भले ही नाफिक्री दर्शाएं लेकिन अब धुएं को यूं ही मत उड़ाइएगा। क्योंकि दारुल उलूम देवबंद ने इस पर अब फतवा जारी कर दिया है। दारुल उलूम ने नशा करना हराम और स्मोकिंग को नाजायज करार दे दिया है। फतवा दिया गया है कि यदि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है तो इसे पीना नाजायज है। यह फतवा स्वास्थ्य मंत्रालय के हक में है तो सिगरेट कंपनियों के लिए बड़ा झटका भी है।

देवबंद के दारुल उलूम की फतवा आनलाइन वेबसाइट के जरिए से मोहल्ला साठा निवासी अनवर ने सवाल किया था कि क्या सिगरेट पीना हराम है। अगर सिगरेट पीना नाजायज है तो इसका विकल्प क्या है। उन्होंने संबंधित विभाग से यह भी पूछा कि क्या हुक्का पीना दुरुस्त है? देवबंद के मुफ्ती-ए-करीमा ने शरीयत की रोशनी में जवाब देते हुए फतवा के माध्यम से कहा कि सिगरेटनोशी अगर सेहत के लिए नुकसानदायक है तो नाजायज है। यदि नुकसानदायक न हो तो भी इसको हराम करार दिया है। उन्होंने सवाल के जवाब में कहा कि सिगरेट पीना इस्लाम में (मकरुह) नापसंदीदा करार दिया गया है। जो चीज मकरुह है उसका सेवन जायज नहीं हो सकता।

हज कमेटी के सदस्य नूर कुरैशी ने बताया कि जो चीज इस्लाम में हराम जायज हो चुकी है उसका सेवन करना गलत है। कई मुस्लिम संगठनों ने देवबंद के मुफ्ती-ए-करीमा के फतवे का समर्थन किया है। बुलंदशहर जामा मस्जिद के इमाम मौलाना जैनुल आबदीन का कहना है कि सिगरेट वाकई बुरी लत है, इससे जितना बचा जा सके बचना चाहिए। सिकंदराबाद जामा मस्जिद के मौलाना मौहम्मद आरिफ कासमी का कहना है कि शरीयत में सिगरेट या हुक्का पीना मकरुह बताया गया है।

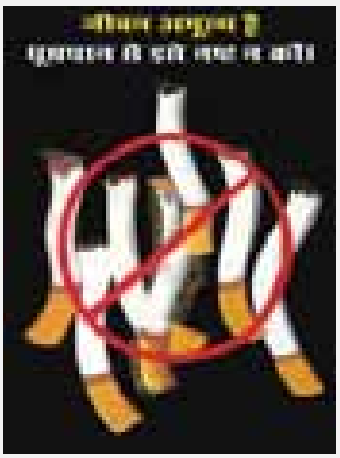

सुहैल खान,
बुलंदशहर

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- रांची में मई 2007 में विधानसभा में एक सहायक की नौकरी पाने वाले व्यक्ति ने दो वर्ष में ही 50 करोड़ से अधिक की संपत्ति अर्जित कर ली है। यह संपत्ति उसने खुद अपनी पत्नी और सगे-संबंधियों के नाम से अर्जित की है। इसकी पहुंच का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसे रहने को प्रधान सचिव रैंक के आई. ए.एस. का क्वार्टर आवंटित किया गया है। इसमें वह आज भी रह रहा है। इस किरानी के खिलाफ हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की गयी है।

- देश में लगभग 300 मेडिकल कॉलेजों में 30 फीसदी पद खाली पड़े हैं। करीब 40 फीसदी नॉन-क्लीनिकल टीचिंग तथा 20 फीसदी क्लीनिकल टीचिंग पद खाली पड़े हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में करीब 30-35 फीसदी टीचिंग पद खाली होने का अनुमान है।

- देश में पहली से कक्षा आठवीं तक के 12 लाख स्कूलों के लिए 7.5 लाख शिक्षकों की कमी है। डेढ़ लाख हाइ स्कूलों एवं इंटर कॉलेजों में करीब चार लाख शिक्षकों की जरूरत है। करीब एक करोड़ बच्चे अभी भी स्कूल जाने से वंचित हैं। इन्हें शिक्षा देने के लिए सरकार को पांच लाख और शिक्षक चाहिएं।

- ग्लोबल हंगर इंडेक्स के मुताबिक भारत के करीब 40 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं। इंडेक्स में भारत 65वें स्थान पर है।

- सूखे और बाढ़ ने देश में फसलों को भारी नुकसान पहुंचाया है। फिर भी देश के पास इतना भंडार है जिससे गेहूं और चावल जैसे प्रमुख खाद्यान्नों के लिए आयात पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। भारत के पास गेहूं और चावल का पर्याप्त भंडार है। आयात करने की आवश्यकता नहीं है। दलहन के मामले में हर साल की तरह 30 से 40 लाख टन तक की कमी पूरा करने के लिए देश को विदेशों से आयात करना होगा। सूखे के कारण धान के अलावा दलहन फसलों को लेकर पैदा हुई आशंका ने इनकी कीमतों को आसमान पर पहुंचा दिया है।

अणुव्रत समिति बोरड़ा

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने देशभर में लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्राओं के माध्यम से उच्च शिखरों का स्पर्श किया है। वर्तमान में आचार्य तुलसी के अनुयायी आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत आंदोलन के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने के क्रम में अणुव्रत समिति बोरड़ा द्वारा अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

सायंकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिदिन सायं 8 बजे से 9 बजे तक अणुव्रत प्रेक्षाध्यान के कार्यक्रम अणुव्रत की अवधारणा के अनुकूल चलाए जाते हैं। राष्ट्रीय पर्वों पर स्कूली बच्चों को अणुव्रत नियमों के प्रति जागरूक किया जाता है। क्षेत्र में समय-समय पर व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम चलाकर लोगों को नशामुक्त बनाया गया है। फलस्वरूप अनेक व्यक्ति तथा परिवारों ने नशामुक्ति अभियान में शरीक होकर लाभ कमाया है। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में विभिन्न धर्मों के साथ मिल-बैठ कर अणुव्रत की अवधारणा के अनुरूप साम्प्रदायिक सौहार्द एवं आपसी भाईचारे की भावना को विकसित किया गया।

अपने संपर्क अभियान के अंतर्गत क्षेत्र के स्कूलों एवं कॉलेजों के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को अणुव्रत आचार संहिता के तहत वर्गीय अणुव्रत नियमों के पालन का संकल्प कराया गया। प्रत्येक वर्ष के मई और जून माह में राहगीरों के लिए पानी पीने हेतु व्यवस्था की जाती है। स्थानीय अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष अर्जुनदास जैन, वर्तमान अध्यक्ष उमेश कुमार जैन तथा जगदीश जैन के प्रयासों से उड़ीसा सरकार के श्रम एवं कल्याणमंत्री तथा कालाहांडी के भवानी पाटन क्षेत्र के विधायक प्रदीप्त कुमार नायक ने मुनि भूपेन्द्र कुमार से मार्ग दर्शन लेकर अणुव्रत नियमों के पालन करने का संकल्प लिया। अणुव्रत समिति के तत्वावधान और मुनि कमलकुमार के दिशा-निर्देश में बोरड़ा में चल रहे सभा भवन का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर बढ़ रहा है। बोरड़ा अणुव्रत समिति क्षेत्र में अणुव्रत आंदोलन को तेजस्विता देने का हर संभव प्रयास कर रही है।

अहिंसा शांति की संजीवनी है

आमेट। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह में ''अहिंसा दिवस'' पर मुनि तत्वरूचि 'तरूण' ने कहा अहिंसा धर्म की आत्मा और शांति की संजीवनी है। हिंसा तनाव और अशांति का मूल है। आत्म सुरक्षा ही सच्ची अहिंसा है। किसी को मारना ही हिंसा नहीं है, बल्कि किसी का अहित चिंतन करना भी हिंसा है। मनसा, वाचा, कर्मणा से किसी प्रकार की हिंसा न करना अहिंसा है। समारोह में गोपाल सिंह चौहान विकास अधिकारी पंचायत समिति आमेट मुख्य अतिथि एवं जगदीश चन्द्र जोशी मुख्य वक्ता थे। नेणचन्द्र हिरण ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समारोह में इन्द्रमल गेलड़ा, प्रेक्षा प्रशिक्षक मिश्रीलाल चौधरी, दिनेश कुमार दूगड़ उपस्थित थे। शिक्षाविद् मोहनलाल दक ने आभार ज्ञापित किया। मुनि भवभूति, मुनि कोमल, मुनि विकास ने भी सभा को संबोधित किया।

अणुव्रत समिति टिटिलागढ़

जन-जन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए अणुव्रत आंदोलन ने समाज के सभी क्षेत्रों में कार्य किया है। व्यक्ति सुधार ही समाज एवं राष्ट्र की बुनियाद है। अणुव्रत का ध्येय है कि लोगों का जीवन नैतिक मूल्यों से आबद्ध हो। इसी क्रम में अणुव्रत समिति टिटिलागढ़ (उड़ीसा) ने अणुव्रत की लौ को प्रज्जवलित किया है। समिति ने अपने क्षेत्र में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के कार्यक्रम चलाकर कई महत्वपूर्ण कार्यशालाएं आयोजित की। अणुव्रत आचार संहिता के पेम्फलेट लोगों के बीच बांटे गए। इसके साथ-साथ अणुव्रत गीत के पेम्फलेट वितरित कर लोगों को गीतों के माध्यम से नैतिक संदेशों से अवगत कराया गया।

प्रार्थना सभा के उपरांत जीवन विज्ञान की जानकारी दी जाती रही। विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को 40 मिनट के जीवन विज्ञान प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी। देश में आम चुनाव के अवसर पर तेरापंथी सभा केसिंगा की सहभागिता एवं सहयोग से अणुव्रत समिति टिटिलागढ़ ने चुनाव शुद्धि अभियान का संचालन कर मतदाताओं को स्वस्थ एवं स्वच्छ मतदान हेतु जागरूक किया।

1 सितंबर 2009 को महावीर हिन्दी विद्यालय के 300 छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को अणुव्रत गीत के पेम्फलेट वितरित किए गए।

5 सितंबर 2009 को ओम वेली स्कूल के 200 छात्रों एवं 10 शिक्षकों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान पुस्तिका की 100 प्रतियां एवं अणुव्रत गीत के पेम्फलेट बांटे गए। डी.ए.वी. विद्यालय के 200 छात्र एवं विद्यालय के शिक्षक वर्ग के मध्य 45 मिनट की जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया। साथ ही अणुव्रत गीत और अणुव्रत से संबंधित पुस्तिकाएं बांटी गयी।

23 सितंबर 2009 को प्रातःकाल नशामुक्ति पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। रात्रिकालीन सत्र में पर्यावरण की सार्थकता पर एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। प्रस्तुति डी.ए.वी. स्कूल के छात्र एवं शिक्षकों के द्वारा दी गयी। जिसमें बच्चों के अभिभावक, अणुव्रत कार्यकर्ताओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम के संयोजन में सुरेन्द्र एवं गोविंद जैन का सराहनीय सहयोग रहा। अणुव्रत समिति टिटिलागढ़ के अध्यक्ष राधेश्याम अग्रवाल व मंत्री ओमप्रकाश जैन तथा क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षक एवं पदाधिकारियों से संपर्क साध कर प्रत्येक स्कूल के शिक्षकों को अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों से परिचित करवाने की योजना तैयार की है।

अणुव्रत समिति मरोली

अणुव्रत के लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन हैं व्यक्ति-व्यक्ति को अणुव्रत दर्शन से परिचित कराना, आध्यात्मिक, नैतिक व मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना, अणुव्रती बनने की प्रेरणा देना एवं हृदय-परिवर्तन और व्यवस्था में संतुलन बनाना है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अणुव्रत समिति मरोली कार्यरत है।

साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान योग केन्द्र का विधिवत् शुभारंभ किया गया है जो प्रतिदिन नियमित रूप से चल रहा है। समिति ने अणुव्रत पाक्षिक हेतु एक सौ से अधिक ग्राहकों को तैयार किया तथा अणुव्रत पाक्षिक की गुणवत्ता हेतु कुछ विज्ञापनों की व्यवस्था भी करवाई है।

2 अक्टूबर 2008 को समिति ने गांधी जयंती के अवसर पर कस्तूरबा सेवाश्रम मरोली में ''विश्व अहिंसा दिवस'' का कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय एवं अहिंसा प्रशिक्षण इत्यादि से लोगों को अवगत कराया गया।

आचार्य तुलसी के जन्मदिवस को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर एक वृहद् अहिंसा रैली भी निकाली गयी। अनेक लोगों ने व्यसनमुक्त जीवन शैली का संकल्प लिया। समिति से जुड़े सभी अणुव्रती कार्यकर्ताओं ने क्षेत्र में किसी भी विपदा एवं संक्रामक रोग आदि के समय अपनी सेवाएं देने के लिए समर्पण का संकल्प किया है।

देश में लोकसभा चुनाव के दौरान समिति ने क्षेत्रीय स्तर पर अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान चलाया। इस संदर्भ में स्वस्थ एवं स्वच्छ चुनाव प्रक्रिया अपनाने की दिशा में अनेक सभाएं आयोजित की गयी एवं जगह-जगह अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के पेम्फलेट लोगों में वितरित किए गए।

बीदासर में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में मरोली के प्रेक्षाध्यापक सुरेशचंद देसाई ने भाग लिया। आचार्यश्री के जन्मदिवस पर सर्वधर्म समभाव एवं मानवीय एकता विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी। इसमें समाज के विभिन्न समुदाय के लोगों ने भाग लिया और सांप्रदायिक सौहार्द एवं भाईचारा बनाए रखने के क्रम में अपनी मंगलकामनाएं व्यक्त की।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कस्तूरबा सेवाश्रम मरोली में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शुरू करने की योजना तय हो चुकी है। इसकी औपचारिक स्वीकृति आश्रम प्रमुख ट्रस्टी महात्मा गांधी की पौत्री उषा बेन गोकाणी द्वारा प्राप्त हो चुकी है।

अणुव्रत समिति बाड़मेर

अणुव्रत आंदोलन अहिंसक-नैतिक चेतना जागृति का आंदोलन है। जन-जन में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा हो यही अणुव्रत आंदोलन का ध्येय है। नैतिकता के मूल्यों को विकसित करने के लिए जरूरी है संकल्प। वह संकल्प की भाषा ही अणुव्रत की आचार संहिता है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए बाड़मेर अणुव्रत समिति अणुव्रत गोष्ठियों, विशेष कार्यशालाओं के माध्यम से नगर में कार्यरत हैं। समिति द्वारा क्षेत्र में आयोजित किये गये कार्यक्रमों के समाचार राजस्थान पत्रिका एवं दैनिक भास्कर में अणुव्रत के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु प्रकाशित करवाये जाते रहे हैं।

अगस्त 2008 को पाकिस्तान सीमा के समीप जैसिंदर गांव में समणी हंसप्रज्ञा के सान्निध्य में, राजेन्द्र सेठिया के सहयोग एवं लाइन्स क्लब के तत्वावधान में 800-900 छात्र-छात्राओं के लिए अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके साथ ही नशामुक्ति बोध ज्ञान कार्यक्रम चलाया गया।

साध्वी अमृतप्रज्ञा के सान्निध्य में एवं महिलाओं के सहयोग से नगर के शिवकुटिया, धौला आकड़ा में एक विशाल गोष्ठी कन्या भ्रूणहत्या निषेध और अणुव्रत की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित की गयी।

नगर के विभिन्न विद्यालयों, मुख्य रूप से बाल मंदिर गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल, अन्तरी बाई स्कूल, मोहन बाल निकेतन स्कूल, गांधी चौक में लगभग 1000 विद्यार्थियों को शामिल कर अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत का पोस्ट कार्ड वितरण कर विद्यार्थियों में अणुव्रत के प्रति चेतना जागृत की गयी।

15 वर्षों से सतत् नियमित जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान की अवधारणा के अनुरूप योगासन इत्यादि कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। अणुव्रत के तहत यह कार्यक्रम होली, दीपावली एवं 15 अगस्त जैसे विशेष आयोजनों पर भी रखे जाते हैं। क्योंकि प्रतिभागीगण प्रेक्षाध्यान केन्द्र बाड़मेर में अति उत्साह से बिना नागा इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं और आयोजक भी अणुव्रत की अवधारणा के अनुरूप इसे संचालित किए हुए हैं। अणुव्रत समिति बाड़मेर के सभी कार्यकर्ता अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में संलग्न हैं।

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत के प्रथम नियम ''मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।'' को विश्वव्यापी बनाया जाये, तो स्थितियों में बदलाव आ सकता है और अनावश्यक हिंसा को रोका जा सकता है। **आचार्य महाप्रज्ञ**

अणुव्रत समिति छापर

अणुव्रत दर्शन के अनुरूप व्यक्ति निर्माण एवं समाज निर्माण करते हुए अहिंसक समाज संरचना का प्रयास एवं तदनुरूप प्रचार-प्रसार तथा अन्यान्य अपेक्षित साधनों द्वारा अणुव्रत अभियान को सफल बनाना है। इसी शृंखला में अणुव्रत समिति छापर पूर्ण सक्रियता के साथ अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता में संलग्न है।

वर्ष 2008-2009 के दौरान सर्वप्रथम मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में सभा भवन में जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान योग शिविर का आयोजन किया। शिविर में अणुव्रत बाल भारती माध्यमिक विद्यालय के 75 विद्यार्थियों ने भाग लिया। संचालन विनोदकुमार पासवान ने किया। समिति द्वारा एक वृहद 'साम्प्रदायिक सद्भावना' सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें छापर की 36 जातीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सैकड़ों छात्रों ने मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में एवं मुनि सुमेरमल नाहटा की अध्यक्षता में अणुव्रत के संकल्प स्वीकार किए गए। समय-समय पर समिति द्वारा करणीय कार्यों की रूपरेखा तय कर उसके अनुरूप कार्य किया जा रहा है। भिक्षु साधना केन्द्र में मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में 13वीं अणुव्रत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा तथा अनेक स्कूलों के प्रधानाध्यापकों से संपर्क कर उन्हें अणुव्रत आंदोलन से अवगत करवाया।

क्षेत्र में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन क्षेत्र की सार्वजनिक संस्थाओं एवं सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों एवं सार्वजनिक स्थलों पर किया गया। इसमें मुनि कमलकुमार का प्रेरणापूर्ण सान्निध्य रहा।

अणुव्रत निबंध प्रतियोगिता के 31 विद्यार्थी एवं संगीत प्रतियोगिता के 107 विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण समारोह मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में रखा गया। जिसमें आर्थिक सौजन्य निर्मल कुमार दुधोड़िया गुवाहाटी प्रवासी का रहा।

3 फरवरी 2009 को अणुव्रत परीक्षा में बैठे 269 विद्यार्थी एवं लेख निबंध प्रतियोगिता के लिए 100 विद्यार्थियों का कार्यक्रम मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में रखा गया।

1-3 मार्च 09 तक बीदासर में आयोजित अणुव्रत आंदोलन के 61 वें अणुव्रत स्थापना दिवस में भाग लेने हेतु समिति के पदाधिकारी धर्मप्रकाश बैद एवं हुकमाराम बरवड़ शामिल हुए। 29 मार्च 09 को अणुव्रत जिला समिति की कार्यकारिणी की बैठक बीदासर में आयोजित हुई। जिसमें अणुव्रत समिति छापर के अध्यक्ष रणजीत दूगड़ एवं मंत्री हुकमाराम बरवड़ ने भाग लिया।

20 अगस्त 09 को संगीत, चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का कार्यक्रम रखा गया। इसमें अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया। 29 अगस्त 09 को राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत श्यामसुखा एवं मंत्री एडवोकेट मनोहरलाल बाफणा तथा कोषाध्यक्ष शुभकरण चोरड़िया छापर आए। इस अवसर पर मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में एक महत्त्वपूर्ण बैठक आयोजित की गयी। जिसमें भावी कार्ययोजना पर चिंतन हुआ। 31 अगस्त 09 को 5-11 सितंबर 09 को मनाये जाने वाले अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह हेतु छापर के छः स्कूलों में सभी प्रधानाध्यापकों से संपर्क साधा गया।

4 सितंबर 09 को अष्टमाचार्य कालूगणी पट्टोत्सव अवसर पर भिक्षु साधना केन्द्र में 31 बच्चों को पुरस्कार दिये गये।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह-2009 का कार्यक्रम निर्धारित कार्यक्रमानुसार मनाया गया। इस दौरान 5 सितंबर 09 को 'सांप्रदायिक सौहाद दिवस' डॉ. जाकिर हुसैन शिक्षण संस्थान में मनाया गया। इसमें मुस्लिम समाज के भाइयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और शांति एवं प्रेम से रहने के संकल्प लिये। 6 सितंबर 09 को 'अहिंसा दिवस' भिक्षु साधना केन्द्र में मनाया गया। 7 सितंबर 09 को 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' अणुव्रत बाल भारती विद्यालय में मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अणुव्रत नियमों के संकल्प लिये। 8 सितंबर 09 को 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' जनकल्याण बालिका सीनियर स्कूल एवं तोलाराम भंसाली बाल मंदिर स्कूल का संयुक्त कार्यक्रम रखा गया। 9 सितंबर 09 को 'नशामुक्ति दिवस' राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में मनाया गया। इसमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। 10 सितंबर 09 को 'अनुशासन दिवस' मरूधर शिक्षण संस्थान में मनाया गया, जिसमें विद्यार्थियों को अनुशासनात्मक जीवन जीने की कला सिखाई गई एवं नशामुक्ति का संकल्प कराया गया। 11 सितंबर 09 को 'जीवन विज्ञान दिवस' आदर्श विद्या मंदिर में मनाया गया। इसमें विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला के सूत्र सिखाए गये। कार्यक्रम की सफलता में मुनि आलोककुमार, मुनि अक्षयकुमार, धर्मप्रकाश बैद, रणजीत सिंह दूगड़, हुकमाराम बरवड़, प्रदीप सुराणा, विनोद नाहटा, विनोद पासवान का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत की दृष्टि में वही ऊंचा और स्पृहणीय जीवन है, जो अधिक से अधिक संतोषी, सरल और संयत है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

आचार्य तुलसी स्मारक अनुष्ठान पर आचार्य महाप्रज्ञ का वक्तव्य

सम्पूर्ण जैन विश्व भारती ही स्मारक है

लाडनूं, 6 अक्टूबर।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन विश्व भारती में निर्मित आचार्य तुलसी स्मारक पर श्रद्धार्पण अनुष्ठान समारोह अ.भा. महिला मण्डल के तत्वावधान में आयोजित हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञ ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कुछ महापुरुषों के स्मारक तो मनुष्य के मस्तिष्क में विद्यमान होते हैं। किन्तु भौतिक जगत में भी प्रतीकात्मक रूप से स्मृति और आराधना का एक स्थान आवश्यक है। मूल रूप में सम्पूर्ण जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय ही स्मारक है परन्तु इस स्मारक के द्वारा एक तरह से बिंदु खोजने का काम हुआ है, जिस तरह एक डॉक्टर पूरे शरीर में दवा का संचार करने के लिए बिंदु खोजता है इसी तरह स्मारक का निर्माण उस बिंदु की खोज है जिसके माध्यम से एवं जैन विश्व भारती के योग से सम्पूर्ण विश्व में आचार्य तुलसी के कर्तृत्व का प्रसार हो सकेगा।

स्मारक का भी महत्त्व होता है। यह एक प्रतीक होता है, इससे यहां आने वाले लोगों के रग-रग में आचार्य तुलसी के अनुदानों और कर्तृत्व का संचार हो सके इस पर ध्यान देना जरूरी है। लाडनूं आचार्य तुलसी की जन्मभूमि है और यहां उनके कर्तृत्व को देखने का एक बड़ा संस्थान है इसलिए उसकी स्मृति हो यह जरूरी है। जिसकी कल्पना की गई उस कल्पना को महिला मण्डल ने निष्ठा के साथ पूरा किया है। हमें यह सोचना है कि यह स्मारक प्रेरक बने।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा किसी आराधना का मूल स्मारक तो चेतना में हो सकता है लेकिन यह भौतिक स्थान भी कुछ निमित्त बन सकते हैं। नवनिर्मित यह स्मारक आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में श्रद्धार्पण का प्रमुख स्थान सिद्ध होगा।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा आचार्य तुलसी का सच्चा स्मारक उनके विचार दर्शन में है।

अ.भा. महिला मंडल की अध्यक्षा सौभाग बैद, महामंत्री वीणा बैद ने सम्पूर्ण महिला समाज की तरफ से श्रद्धा अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन सूरज बरड़िया ने किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने श्रद्धार्पण अनुष्ठान के पश्चात जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए कहा आज उल्लास और उमंग का वातावरण है जिन लोगों ने इस स्मारक को बनाने का प्रयत्न किया है और जिन लोगों ने इसमें योगदान दिया उनके मन में भी उल्लास है और देखने वालों के मन में भी उल्हास है, इस उल्लास के वातावरण में भविष्य पर ध्यान दें तो यह स्मारक आराधना और साधना का केन्द्र बने। यह स्थल जहां अपने आपको समझने और आचार्य तुलसी के कर्तृत्व का स्मरण कराने वाला स्मारक बने।

आचार्यश्री ने आचार्य तुलसी के जीवंत कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए कहा आकार में प्राण भरना विशेष बात होती है जब तक प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती तब तक मूर्तिपूजक वाले पूजा नहीं करते। इसी तरह यह मानना चाहिए कि आकार बन गया है अभी प्राण प्रतिष्ठा बाकी है। एक क्षेत्र का भी विशेष प्रभाव होता है, नकारात्मक विचार होते हैं वे भी छूट जाते हैं तो यह स्थल हजारों-लाखों लोगों के लिए आत्म प्रेरित करने वाला बने।

स्मारक निर्माण में महत्वपूर्ण अर्थ सहयोग देने वाले विसर्जनदाता जुगराज नाहर का परिचय देते हुए डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा नाहरजी उस परिवार से संबंधित हैं जिसने हमें मुनि घासीरामजी जैसे संत दिये। जुगराजजी के दादाजी ने अपने दत्तक पुत्र का संघ में दान दिया और जुगराजजी अर्थदान कर मेवाड़ की भामाशाह परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

इण्डियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

नैतिकता के समावेश से ही हिंसा रुक सकती है

लाडनूं, 8 अक्टूबर। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में आयोजित इण्डियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टेडिज के 32वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि अब तक देश में जो भी विकास की अवधारणा बनाई गई उनमें आर्थिक व भौतिक विकास को ही आदर्श माना गया। आर्थिक व भौतिक विकास जरूरी है। लेकिन उसमें अहिंसा, पर्यावरण व नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं होगा तब तक विकास की सारी अवधारणा हिंसा की ओर ही ले जाएगी। विकास की अवधारणा में नैतिकता के विकास को शामिल करने पर ही हिंसा थम सकती है। केवल भाषणों से किसी भी तरह का परिवर्तन होना संभव नहीं है। परिवर्तन के लिए प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। आतंकवादियों की हिंसा की नियमित ट्रेनिंग होती है लेकिन अहिंसा के लिए कोई ट्रेनिंग और उसका नेटवर्क नहीं है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि गांधी के साथ अब तक न्याय नहीं हुआ है। गांधी के विचार को सिर्फ एकांत दृष्टि से देखा गया है। जबकि उसे सापेक्ष दृष्टि से देखा जाना चाहिए। आज गांधी का नाम तो हो रहा है लेकिन गांधी का काम नहीं हो रहा है।

आचार्यप्रवर ने अहिंसा समवाय भवन में आयोजित कार्यक्रम में कहा भगवान महावीर ने कहा है कि कुछ भी करो उसमें काल क्षेत्र, भाव आदि दृष्टियों से उसकी पूर्ण मीमांसा करो। जब तक अहिंसा व अपरिग्रह दोनों को एक साथ नहीं देखा जाएगा तब तक हिंसा समाप्त नहीं होगी।

पूर्व सांसद एवं एफ्रो एशियाई दर्शन परिषद के सचिव प्रो. रामजीसिंह ने कहा कि आज हिंसा के लिए केवल भारत में ही नहीं दुनिया में भी कोई स्थान नहीं हो सकता। उन्होंने महात्मा गांधी की लिखित पुस्तक हिन्द स्वराज को लोगों की चेतना बदलने वाली पुस्तक बताते हुए कहा कि स्वतंत्रता व नागरिकों के मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। भारतीय गांधी अध्ययन समिति के अध्यक्ष प्रो. जयनारायण शर्मा ने विकास की अवधारणा में सापेक्ष अर्थशास्त्र की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किये। अहिंसा एवं शांति विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी.आर. दूगड़ ने अतिथियों एवं सम्मेलन में पहुंचे सम्भागियों का स्वागत किया। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जापान, अमेरिका, ईरान और नेपाल सहित देश के विभिन्न भागों से 100 से अधिक सम्भागीगणों ने भाग लिया। इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. जे.पी.एन मिश्रा उपस्थित थे।

अणुव्रत दर्शन में स्वस्थ समाज रचना का प्रारूप

सूरत। साध्वी सुमनश्री ने 'अणुव्रत चेतना दिवस' को संबोधित करते हुए कहा आचार्य तुलसी ने देश की आजादी के साथ अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। उसके पीछे जन-जन की नैतिक चेतना जगाना संयम और व्रतों की आचार संहिता से आध्यात्मिक निष्ठा जागृत करने का उद्देश्य रहा। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम सभी जाति, वर्ग, सम्प्रदाय के लिए स्वीकृत करने योग्य है। इसमें छोटे, बड़े, अमीर-गरीब का कोई भेदभाव नहीं। अणुव्रत मंच से पूरे देश में नशामुक्ति, पर्यावरण शुद्धि, चुनाव शुद्धि और साम्प्रदायिक सौहार्द जैसे रचनात्मक कार्य को अंजाम दिया जाता है।

साध्वी सुरेखा ने कहा अणुव्रत नैतिक क्रांति की एक मशाल है। जिसमे द्वारा स्वस्थ समाज संरचना का स्वप्न साकार हो सकता है। 'संयम ही जीवन है' यह इसका महत्वपूर्ण उद्घोष है। छोटे-छोटे नियमों से जीवन में नैतिकता के संस्कार जागृत होते हैं। अणुव्रत अपने से अपना अनुशासन का पाठ पढ़ाता है। आचार्य तुलसी का यह अवदान पूरी मानव जाति के लिए वरदान है।

सत्यं, शिवं, सुंदरम् की अनुभूति कराने वाला महाग्रंथ है ऋषभायण

ऋषभायण महाकाव्य पर संगोष्ठी का आयोजन

लाडनूं 10 अक्टूबर। *महान दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा भगवान ऋषभ के जीवन चरित्र पर रचित ऋषभायण महाकाव्य पर जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में युवाचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, साध्वी विश्रुतविभा सहित अनेक मुनियों, साध्वियों, समणियों सहित देश के बहुचर्चित कवि बलदेव वंशी, शेरजंग गर्ग, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, नरेश शांडिल्य, शशिकांत, ममता वाजपेयी, अनिल गोयल, राजेश चेतन, चिराग जैन एवं जयपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजेश व्यास, शहर काजी सहित अनेक विद्वानों ने शिरकत की।*

इस संगोष्ठी में कवियों ने ऋषभायण महाकाव्य को सत्यं, शिवं, सुन्दरम, की अनुभूति कराने वाला महाकाव्य बताया तो साहित्यकारों ने जीवन दर्शन को गहराई से समझाने वाला एवं वर्तमान समस्याओं का समाधान बताने वाला महाकाव्य बताया।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए ऋषभायण महाकाव्य के रचनाकार आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि ऋषभायण महाकाव्य के सत्र में शासक वर्ग की अर्हताओं का वर्णन किया गया है। उन अर्हताओं से युक्त पंक्तियों को हिन्दुस्तान के शासक वर्ग को श्रवण कराया जाये और उस बोध को शासक वर्ग धारण करे तो देश का कायाकल्प हो सकता है। आचार्यवर ने कहा कि देश की जनता से निग्रह शक्ति को उधार लेने वाला शासक अगर उस उधार को वह भूल जाता है तो वह कभी खिल नहीं सकता और सफल नहीं हो सकता। जो शासक जितेन्द्रिय नहीं होता वह कभी न्याय नहीं कर सकता। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि इस महाकाव्य में चिरंतन सत्य एवं सामयिक सत्य दोनों के दर्शन होते हैं।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कवि शेरजंग गर्ग ने कहा कि 25 वर्षों तक किसी भी कवि ने महाकाव्य नहीं लिखा। अब आचार्य महाप्रज्ञ ने ऋषभायण महाकाव्य की रचना कर नये इतिहास का सर्जन किया है। उन्होंने कहा कि साहित्य का नोबेल पुरस्कार केवल रविन्द्रनाथ टेगौर को ही मिला है। अब इस देश के एक और कवि को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए और वे कवि हैं आचार्य महाप्रज्ञ। इनके द्वारा रचित यह महाकाव्य अपनी लंबी यात्रा तय करेगा। मुख्य वक्ता बलदेव वंशी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ऐसे महान कवि एवं दार्शनिक है कि इनके सान्निध्य में पूरा देश खड़ा हो सकता है। उन्होंने कहा कि संत नहीं होते तो यह संसार जल जाता। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान संतों ने ही इस संसार को जलने से बचाया है।

संगोष्ठी में जयपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार राजेश व्यास ने ऋषभायण महाकाव्य को जीवन दर्शन के गूढ रहस्यों को समझाने वाला महाकाव्य बताते हुए कहा कि ऋषभायण महाकाव्य में ऐसे सूत्र प्रदान किये गये हैं जो वर्तमान की समस्याओं का समाधान करने के साथ व्यक्ति को व्यक्ति से, व्यक्ति को समाज से जोड़ते हैं। लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने कहा कि ऋषभायण महाकाव्य ऐसे समय में आया है जब समाज से लेकर राजनीतिक साहित्य जगत तक में प्रदूषण फैला हुआ है। इस प्रदूषण को समाप्त करने में यह महाकाव्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। नरेश शांडिल्य ने इस महाकाव्य को जाति, सम्प्रदाय देश की सीमा से परे दिग-दिगन्त तक फैलने वाला महाकाव्य बताया। इस संगोष्ठी के कल्पनाकार कवि राजेश चैतन ने परिचय प्रस्तुत किया एवं संगोष्ठी का संचालन युवा कवि चिराग जैन ने किया। संगोष्ठी को सफल बनाने में प्रो. बच्छराज दूगड़, इन्द्र बैंगानी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

अणुव्रत आचार संहिता जीवन निर्माण का मार्ग

जयपुर

अणुव्रत समिति जयपुर द्वारा शहर में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह मुनि विनयकुमार आलोक एवं साध्वी संघमित्रा के सान्निध्य में अणुविभा एवं भिक्षु साधना केन्द्र में साथ-साथ मनाया गया।

● 'अनुशासन दिवस' का आयोजन आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय में हुआ। मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने कहा 'निज पर शासन फिर अनुशासन' यह एक ऐसा सूत्र है जो जीवन को रूपांतरण करने में समर्थ है। शासन एक प्रणाली है जो दूसरों पर शासन करती है और अनुशासन स्वयं पर अनुशासन करता है। जो शासन को साध लेता है, वही अनुशासन कर सकता है। मुनिश्री के आह्वान पर सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या व भ्रूणहत्या न करने का संकल्प स्वीकार किया। प्राचार्या वंदना सिंधु, महेन्द्र जैन ने विचार रखे। समिति की अध्यक्ष विमला दूगड़ ने प्राचार्य तथा विद्यालय अध्यक्ष नरेश जैन तथा अन्य लोगों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। भिक्षु साधना केन्द्र पर साध्वी संघमित्रा ने कहा व्यक्ति का विकास समाज व देश के लिए लाभदायक है। अणुव्रत आचार संहिता जीवन निर्माण का मार्ग बतलाती है। प्रामाणिकता व नैतिकता विकास के आधार स्तंभ होते हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जस्टिस एन.के. जैन, आशा नीलू टांक, नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' एवं डॉ. जयश्री सिद्धा ने अपने विचार रखे।

● अणुविभा में आयोजित 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' पर मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने कहा आचार्य तुलसी युग नायक थे। उन्होंने वैश्विक समस्याओं को समझा और उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। अणुव्रत ने समाज में व्यापक जनक्रांति की और उसी का सुफल है कि समाज में बदलाव आया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल जस्टिस नवरंगलाल टिबरेवाल, समारोह के अध्यक्ष चैम्बर ऑफ कॉमर्स के महामंत्री के.एल. जैन, सम्पत सामसुखा, आर.पी. जैन, प्रो. मोदानी, मनोहरलाल बाफना, कैलाश डागा, शुभकरण चौरड़िया प्रमुख रूप से उपस्थित थे। संयोजन पुष्पा बैद ने किया। कार्यक्रम भिक्षु साधना केन्द्र में 'माय ऑन स्कूल' के बच्चों के मध्य मनाया गया। मुख्य अतिथि तकनीकी शिक्षा मंत्री महेन्द्र सिंह मालवीय थे।

● अणुविभा में आयोजित 'पर्यावरण चेतना दिवस' पर मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने कहा शब्द का प्रदूषण सबसे खतरनाक है। वाणी संयम को साधकर जीवन में अनेक दुविधाओं और कलहों से मुक्ति पाई जा सकती है। भिक्षु साधना केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में संभागी जयपुर पब्लिक स्कूल तथा महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के बच्चों को संबोधित करते हुए साध्वी संघमित्रा ने पर्यावरण चेतना जागृति पर विचार रखे। मुख्य अतिथि सेंट्रल स्कूल की प्राचार्या सुमन कपूर थीं।

● ''व्यसनमुक्ति दिवस'' का कार्यक्रम अणुविभा में अणुव्रत समिति जयपुर, राजस्थान प्रदेश नशामुक्ति समिति, विनोबा मंदिर के तत्वावधान में संयुक्त रूप से मनाया गया। मुनिश्री ने कहा नशा नाश का द्वार है। नशे में व्यक्ति स्वयं गुमराह होता है और धीरे-धीरे नशे का आदि बन जाता है। कार्यक्रम में अजय टुकलिया, डॉ. अवध नारायण सिंह, माणकचंद बोहरा, आशा नीलू टांक, सदाशिव शर्मा, धरमवीर पटेवा ने भाग लिया। भिक्षु साधना केन्द्र में साध्वी संघमित्रा ने विद्यार्थियों को व्यसनमुक्ति की प्रेरणा दी। इसी क्रम में अणुविभा एवं भिक्षु साधना केन्द्र में मुनि विनयकुमार 'आलोक' एवं साध्वी संघमित्रा के सान्निध्य में ''जीवन विज्ञान दिवस'' एवं ''अहिंसा दिवस'' के कार्यक्रम उत्साहपूर्वक आयोजित किये गये। इसमें शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

● अणुविभा में आयोजित ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने कहा सम्प्रदाय बुरा नहीं है साम्प्रदायिकता बुरी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व उपराज्यपाल जस्टिस सुरेन्द्र भार्गव ने की। राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व चेयरमैन जे.एम. खान मुख्य अतिथि तथा एन.एन.आई.टी. के प्रो. मो. सलीम इंजीनियर, फादर विजयकुमार सहित गणमान्य व्यक्ति उपस्थिति थे। मुनि गिरीशकुमार ने अणुव्रत गीत का संगान किया। इस अवसर पर विमला दूगड़, सुमन बोरड़, विजयकुमार सेठिया ने विचार रखे। संयोजन पुष्पा बांठिया ने किया।

● भिक्षु साधना केन्द्र में साध्वी संघमित्रा के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि जसबीर सिंह, मदर टेरेसा की मिस रोज लीना, अब्दुल हाफिज, नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने विचार रखे। डॉ. जयश्री सिद्धा एवं विमला दूगड़ ने स्वागत किया। सरोज बैंगाणी ने विचार रखे। आशा नीलू टांक ने आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

धार्मिक सहिष्णुता का विकास जरूरी

श्रीडूंगरगढ़

अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ एवं युवक परिषद् के तत्वावधान में मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम भव्य रूप में आयोजित किए गए।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा सांप्रदायिक सौहार्द के लिए धार्मिक सहिष्णुता का विकास जरूरी है। जो धर्म, मैत्री और प्रेम की गंगा प्रवाहित करता है उसके नाम पर लड़ाई-झगड़ों व दंगों का होना बहुत लज्जाजनक बात है। धर्म कैंची का नहीं सुई का काम करता है। ब्रह्मकुमारी बहन ने कहा धर्म हमें प्रेम और शांति से जीना सिखाता है। धर्म का आधार ही प्रेम और भाईचारा है। इस अवसर पर मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार, रवीन्द्र गोलछा ने अपने विचार रखे। संयोजन अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेन्द्र चूरा व आभार प्रकट समिति के अध्यक्ष जगदीश तांवणिया ने किया।

● ''अहिंसा दिवस'' के अवसर पर बड़ी संख्या में व्यापारी वर्ग उपस्थित था। मुनिश्री ने अणुव्रत दर्शन में अहिंसा की व्याख्या करते हुए कहा जिस समाज और राष्ट्र में अहिंसा, प्रेम और भाईचारे की भावना का साम्राज्य है वह महान् है। हमें संकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर जीवन में करुणा और मैत्री की भावना का विकास करना चाहिए। मुनिश्री ने व्यापारी वर्ग को अणुव्रत व्यापार आचार संहिता के पालन की प्रेरणा दी। इस अवसर पर मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार, लायन्स क्लब के पूर्व अध्यक्ष महावीर माली, रवीन्द्र गोलछा ने विचार रखे। मंगलाचरण महिला मंडल की हेमलता बरड़िया ने किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा आज मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। जिसके फलस्वरूप पारिवारिक और सामाजिक जीवन में तनाव और बिखराव बढ़ा है। अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन करने से स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है। मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार ने विचार रखे। मंगलाचरण मधु झाबक ने किया। संचालन रवीन्द्र गोलछा ने किया।

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा अणुव्रत दर्शन के अनुसार संतुलित विकास होना चाहिए। इस अवसर पर सैकड़ों व्यक्तियों ने पर्यावरण सुरक्षा के संकल्प ग्रहण किये। मधु देवी झाबक, प्रियंका बैद, मुस्कान बरड़िया व तेयुप के उपाध्यक्ष पवन सेठिया ने अपने विचार रखे। संचालन के.एल. जैन ने किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में स्थानीय ओसवाल वाटिका में अणुव्रत समिति ने समाचार पत्र 'भास्कर' द्वारा पर्यावरण की समस्या के निवारण के लिए 'समर्पण' कार्यक्रम के तहत 100-100 वृक्ष लगाये।

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा नशे से मनुष्य की विवेक चेतना लुप्त हो जाती है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों तथा संकल्पबल से नशे की लत से छुटकारा पाया जा सकता है। मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार, लॉयन्स क्लब के पूर्व अध्यक्ष महावीर माली, मास्टर भंवरलाल पुरोहित ने नशे की बुराइयों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उपस्थित बाल्मिकी समाज के हरिप्रसाद ने मुनिश्री की प्रेरणा से बीड़ी का बण्डल तोड़ कर फेंक दिया तथा नशा नहीं करने का संकल्प लिया। किशोर मंडल के 31 छात्रों ने नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। आभार व्यक्त समिति के मंत्री सुरेन्द्र चूरा ने किया। संयोजन रवीन्द्र गोलछा ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

● ''अनुशासन दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा आज हमारा विद्यार्थी समाज अनुशासन हीनता, असहिष्णुता व तोड़फोड़ मूलात्मक हिंसक प्रवृत्तियों में उलझ रहा है। पंडित नेहरू ने एक बार कहा था देश को अपराध, नशा व हिंसा से बचाना जरूरी है। अणुव्रत के व्रतों से आत्मानुशासन की ज्योति प्रज्जवलित हो सकती है। उसके विकास के लिए निज पर शासन फिर अनुशासन के नारे को हृदयंगम करना जरूरी है। मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप स्कूल के प्रधानाध्यापक विजयराज सेवग ने कहा अनुशासित व्यक्ति ही स्वस्थ समाज, स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। अनुशासन गीत का संगान महिला मंडल ने किया। आशा देवी सिंघी ने विचार रखे। संचालन संगीता दूगड़ ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' के अवसर पर विराट विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न विद्यालयों के सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। मुनिश्री ने कहा आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा के अभाव में बौद्धिक विकास का सही उपयोग नहीं हो सकता। इसलिए नैतिक शिक्षा और मूल्यपरक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। शिक्षकों के आत्मविश्वास और चरित्रबल से मूल्यपरक शिक्षा का कार्यक्रम सफल हो सकता है। इस अवसर पर मुनिश्री ने विद्यार्थियों को अणुव्रत विद्यार्थी संकल्प दिलायें। मुनि दीपकुमार, रवीन्द्र गोलछा, सुरेन्द्र चूरा, मुस्कान बरड़िया ने विचार रखे। मंगलाचरण कन्या मंडल ने व आभार समिति के अध्यक्ष जगदीश तांवणिया ने किया। संचालन मुनि सुधाकर ने किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण को मुनि राकेशकुमार की प्रेरणा से विशाल रैली के रूप में परिवर्तित किया गया। इसमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने नशा न करने का संकल्प किया। कस्बे के विभिन्न मार्गों से गुजरती हुई इस रैली ने आमजन को नशा न करने का संदेश दिया। मुनिश्री ने कहा नशा मनुष्य के विवेक को नष्ट कर देता है। जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति की निर्णय क्षमता शून्य हो जाती है। नशा समाज का सबसे बड़ा शत्रु है। रैली का समापन मालू भवन में हुआ। इस अवसर पर साध्वी कमलप्रभा, साध्वी मुक्तिप्रभा, सम्पतप्रज्ञा व साध्वी अनुप्रेक्षा ने नशा न करने की प्रेरणा दी।

आपका मुँह
ऐश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

नैतिकता के बिना शिक्षा अधूरी

मंडी आदमपुर

● मंडी आदमपुर में आयोजित ''जीवन विज्ञान दिवस'' को संबोधित करते हुए साध्वी जयमाला ने कहा नैतिकता के बिना शिक्षा अधूरी है। विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों के साथ नैतिक शिक्षा भी जरूरी है। वह जीवन का सांगोपांग (सर्वांगीण) विकास का मार्ग प्रस्तुत करती है, श्रेष्ठ नागरिक बना सकती है। विद्यार्थी अणुव्रत आचार संहिता को जीवन में उतारने से नैतिक स्तर उन्नत होता है। नकल न करने से ठोस विद्यार्जन की प्राप्ति होती है। हिंसात्मक प्रवृत्तियों से सहज बचा जा सकता है। विनम्रता, सहिष्णुता, अनुशासन जैसे सद्गुणों का जीवन में समावेश होता है। इससे अच्छे बच्चों का निर्माण होता है। स्वयं का, परिवार का, समाज का नाम रोशन होता है। प्रतिभाशाली बनने के लिए जीवन में सद्संस्कारों का होना परम आवश्यक है। इस अवसर पर साध्वीश्री विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये। स्कूल के प्राचार्य अमृतलाल विश्नोई ने स्वागत व आभार प्रकट करते हुए कहा साध्वी द्वय ने हमारे विद्यालय में पधारकर शिक्षकों व छात्रों को जो जीवनोपयोगी सद् शिक्षा व सद् संस्कार दिये, इसके लिए मैं और हमारा पूरा विद्यालय आपका आभारी है। इस अवसर पर हजारों विद्यार्थियों ने अणुव्रत विद्यार्थी संकल्प स्वीकार किये।

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर साध्वी रमाकुमारी ने कहा वर्तमान में न धर्म सुरक्षित है और न पर्यावरण। बढ़ती हुई हिंसा, विद्वेष की भावना, विकृत विचार शैली, असीमित भोगवादी वृत्ति, हरे-भरे पेड़-पौधों का अंधाधुंध कटाव, कल-कारखाने तथा आणविक विस्फोट इनके कारण भयंकर प्रदूषण फैलता जा रहा है। साध्वी जयमाला ने कहा सबसे बड़ा प्रदूषण व्यक्ति के मन में भरा पड़ा है। जिससे आज अपराध, चोरी-डकैती, घोटाले एवं भ्रष्टाचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इनकी रोकथाम के लिए अणुव्रत की आचार संहिता संजीवनी बूटी का काम करती है। अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है, मानवीय गुणों का विकास अणुव्रत के द्वारा संभव है।

● ''अहिंसा दिवस'' पर साध्वीश्री ने कहा करुणा, मैत्री, सौहार्द एवं भाईचारे का पाठ पढ़ाता है। ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' जन-जन को आध्यात्मिक, नैतिक व प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। ''नशामुक्ति दिवस'' पर साध्वीवृंद द्वारा नशा पतन का द्वार है, रोगों का घर है, पैसे की बर्बादी के साथ शरीर को खोखला बनाता है। ''अनुशासन-दिवस'' पर साध्वी रमाकुमारी, साध्वी जयश्री, साध्वी जागृतप्रभा ने प्रकाश डालते हुए कहा अनुशासन की डोर में बंधा हुआ परिवार, समाज, देश और राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है। यह शरीर में मेरुदंड के समान है। ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' संकीर्णता, दुर्भावना, विद्वेष को खत्म कर एक-दूसरे धर्मावलम्बियों को एक मंच पर लाने की मधुर प्रेरणा प्रदान करता है। सप्ताह का कार्यक्रम अति उत्साह वातावरण में मनाया गया। यह बड़ा ही प्रेरणादायक रहा।

नागपुर

निर्धारित कार्यक्रमानुसार समणी सत्यप्रज्ञा, समणी रतनप्रज्ञा, समणी मैत्री प्रज्ञा के सान्निध्य में शहर के विभिन्न विद्यालयों एवं सामाजिक संस्थाओं में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' का कार्यक्रम आदर्श विद्या मंदिर गांधीबाग में संपन्न हुआ। अध्यक्षता संस्था के प्राचार्य आसनारायण ने की।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

इस अवसर पर अरविंद जोहरापुरकर, ओमप्रकाश जैन एवं गुलाबचंद छाजेड़ ने अहिंसा अमृत को अपने आचरण में उतारने पर बल दिया। कार्यक्रम का समापन ''संयममय जीवन हो'' के सामूहिक गायन से हुआ।

● ''अहिंसा दिवस'' गजानन विद्यालय में संपन्न हुआ। अध्यक्षता विजय शहाकार प्राचार्य ने की। संचालन राऊत, वर्ग शिक्षक, गजानन विद्यालय ने किया। आभार गुलाबचंद छाजेड़ ने की।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' श्रेयस विद्यालय, वर्धमान नगर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य सावनेरकर ने की। संचालन रोडे सहायक शिक्षक ने किया। 'निज पर शासन फिर अनुशासन' एवं समय प्रबंधन पर प्रेक्षा-प्रशिक्षक अरविंद जोहरापूरकर ने प्रकाश डाला। स्वास्थ्य संबंधी नियमों पर गुलाबचंद छाजेड़ ने वक्तव्य दिया।

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' रामनगर पाठशाला में संपन्न हुआ। अध्यक्षता आदिनाथ नखाते ने की। संचालन भारती ने किया। इस अवसर पर राजेन्द्र नखाते, अरविंद जोहरापूरकर, डॉ. हेमलता जोहरापूरकर ने विचार रखे। इस दौरान वृक्षारोपण भी किया गया।

● ''अनुशासन दिवस'' मराठी शाला नं. 1 पारडी में मुख्याध्यापक दांडेबुचे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। सभा को अरविंद जोहरापूरकर एवं गुलाबचंद छाजेड़ ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किये।

● समापन समारोह में अणुव्रत समिति, नागपुर के अध्यक्ष गुलाबचंद छाजेड़ ने कहा विद्यालय सर्वधर्म समभाव के प्रतीक हैं। विद्यालयों में सभी धर्मों, जाति, वर्ण के विद्यार्थी बगैर किसी भेदभाव से एक साथ ज्ञानार्जन करते हैं, खेलते-कूदते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं। पर कुछ समय बाद फिर एक हो जाते हैं। अणुव्रत गीत के संगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अणुव्रत सप्ताह की सफलता में डॉ. आर.आर. भंडारी, गुलाबचंद छाजेड़, सुशील बोथरा, आनंदमल सेठिया, एन.बी. ठोंबरे, अरविंद जोहरापूरकर, दीपक सावलकर, एम. सी. दुधकवले, अरुणा ठोंबरे, कडमधाड शिक्षक, राजेन्द्र नखाते, मंगला सरोदे का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत-जीवन विज्ञान प्रमाण-पत्र वितरण

ग्राम सिंघाड़ा के स्कूल के बच्चों को सम्मानित करते मीठालाल भोगर, बाबूलाल कावड़िया एवं जोधराज कावड़िया

सायरा, 1 अक्टूबर। अणुव्रत समिति सायरा के अध्यक्ष मीठालाल भोगर, उपाध्यक्ष बाबूलाल कावड़िया, परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र गौरवाड़ा द्वारा रा.मा.वि. दियारा में प्र.अ. परमलाल ऐसानि द्वारा व सिंघाड़ा रा.मा.वि. प्रधानाध्यापक मोतीसिंह के सान्निध्य में सायरा से दोनों विद्यालयों में जाकर अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान परीक्षा सन् 2007-2008 में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पुरस्कार अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष द्वारा वितरित किये गये। अध्यापक प्रकाश सिंह व अन्य को भी सम्मानित किया गया। दो वर्षों का पुरस्कार प्रत्येक विद्यार्थी तथा दोनों स्कूल के समस्त अध्यापकों को उनकी सेवाओं का अंकन करते हुए दिये गये।

अनुशासन है जीवन विकास का सोपान

जगराओ, 9 सितंबर। अनुशासन जीवन विकास का सोपान है। जो विद्यार्थी अनुशासन में रहकर शिक्षा ग्रहण करता है वह महान बन जाता है। वह स्कूल, परिवार, समाज व देश का गौरव बढ़ाता है। आज के विद्यार्थी में अनुशासन, मानवीय संवेदना और मूल्यों का समाप्त होना सचमुच चिंता का विषय है। ये विचार मुनि रमेशकुमार ने उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत डी.ए.वी. स्कूल में आयोजित अनुशासन दिवस पर व्यक्त किए। मुनिश्री ने आगे कहा चरित्र मानवता का आधार है। चरित्र जीवन की असली सम्पत्ति है। इसे अणुव्रत के नियमों को अपनाकर ही हम अर्जित कर सकते हैं।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. बालकृष्ण भंडारी ने अणुव्रत आंदोलन व आचार्य तुलसी का परिचय दिया।

अणुव्रत सेवी अध्यापिका रोजी गोयल ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए जीवन विज्ञान के प्रयोग कराये।

प्राचार्य पूनम कपाही ने स्कूल की ओर से संतों का व समागत भाई-बहनों का स्वागत किया। सभा के अध्यक्ष वी.के. बंसल ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में महिला मंडल की अध्यक्ष प्रीति जैन, नारी रत्न निर्मला जैन, उपाध्यक्ष मीनू जैन व रजनी जैन इत्यादि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं, शिक्षिक-शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों के अलावा समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यालय परिवार ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

बोरावड़ में अणुव्रत की गूंज

बोरावड़। अणुव्रत अभियान स्वस्थ समाज संरचना की आधार शिला है। जन जीवन में अध्यात्म और नैतिकता के संस्कारों को पुष्ट करने के लिए अणुव्रत सर्वोत्तम मंत्र है। बच्चों को प्रारंभ से यदि संयम और सदाचार के संस्कार दिये जायें तो उनका जीवन उज्ज्वल बन सकता है और राष्ट्र का भाग्योदय हो सकता है। मुनि मिलापचंद एवं मुनि पृथ्वीराज के आशीर्वाद से मुनि मदनकुमार ने बोरावड़ के विभिन्न विद्यालयों में अणुव्रत और जीवन विज्ञान के कार्यक्रम तथा अवधान विद्या के प्रयोग प्रस्तुत किये।

मुनि मदनकुमार ने जय तुलसी विद्या विहार, गांधी शिक्षण संस्थान, टैगोर पब्लिक स्कूल, बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आइडियल पब्लिक स्कूल, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय के हजारों छात्र-छात्राओं को नैतिक मूल्यों का संदेशामृत देकर अणुव्रत की आचार संहिता से संकल्पित किया। कार्यक्रम में जयसिंह कोटेचा, पंकज भंडारी, कुलदीप मेहता, पंकज सुराणा एवं हेमन्त बेताला का सराहनीय श्रम रहा।

इसके अतिरिक्त मुनिद्वय ने दीपावली पर होने वाली आतिशबाजी को रोकने के लिए आतिशबाजी वर्जन अभियान चलाया। इस दौरान हजारों बालक- बालिकाओं को पटाखे न छोड़ने का संकल्प दिलवाया। जिससे शहर में आतिशबाजी के प्रयोग में 50 प्रतिशत कमी आयी। यात्रा के दौरान मुनिद्वय ने खाटू- डीडवाना के आसपास के विद्यालयों में अणुव्रत कार्यक्रम आयोजित कर छात्रों को नैतिक जीवन की प्रेरणा दी।

आचार्य तुलसी पार्क शिलान्यास के अवसर पर निगम पार्षद जितेन्द्र सिंह शंटी एवं अन्य

आचार्य तुलसी पार्क का शिलान्यास

दिल्ली। आचार्य तुलसी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मेयर कंवर सैन की घोषणा के अनुसार विवेक विहार दिल्ली के झिलमिल कॉलोनी मुख्य मार्ग पर आचार्य तुलसी पार्क का शिलान्यास वहां के क्षेत्रीय पार्सद जितेन्द्र सिंह शंटी के हाथों किया गया। मुनि सुमतिकुमार ने मंगल पाठ सुनाया। जितेन्द्र सिंह शंटी ने कहा आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के महान समाज सुधारक ध र्मगुरु थे। अतः उनके नाम पर इस मेन रोड स्थित पार्क का नाम 'आचार्य तुलसी पार्क' रख कर हम उन्हें स्थायित्व प्रदान कर रहे हैं। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने बताया कि इस पार्क में अणुव्रत आंदोलन के बोर्ड आदि लगाये जाएंगे। इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बिमलपत सुराणा, विकास सुराणा सहित अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

अणुव्रत लेखक सम्मेलन लाडनूं में मंचासीन वेद प्रताप वैदिक, मुजफ्फर हुसैन, डॉ. धर्मपाल मैनी, विजयसिंह बरमेचा, ओमप्रकाश सोनी, शांति बरमेचा, डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', डॉ. महेन्द्र कर्णावट

लेखक नैतिकता का प्रकाश फैलाएं

लाडनूं में अणुव्रत लेखक सम्मेलन सम्पन्न

लाडनूं, 13 अक्टूबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में दो दिवसीय (13-14 अक्टूबर) राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली एवं अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में आयोजित हुआ। सम्मेलन में देश भर से 80 लेखकों, साहित्यकारों ने भाग लिया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा मनुष्य की शक्ति से कहीं ज्यादा शब्द की शक्ति काम करती है। महाराणा प्रताप के मानस को एक कवि की पंक्ति ने बदल दिया था। कवि का काव्य और धनुर्धर का बाण लक्ष्य को कंपित नहीं करे तो उसका कोई महत्व नहीं। शब्दों की प्रस्तुति इस तरह से करें कि वे अभिमंत्रित होकर समाज और सत्ताधीश की बेहोशी तोड़े व सुप्ति को हटाकर उन्हें जागृत करे। लेखक वर्ग ऐसे शक्तिशाली वर्ग के रूप में सामने आए कि वह सत्ता के समक्ष सशक्त प्रतिपक्ष की भूमिका में खड़ा हो जाए।

आचार्यश्री ने आगे कहा शरीर और समाज दोनों में जिस तहर एन्टीबॉडीज को होना जरूरी है उसी तरह सत्ता के समक्ष भी इसका निर्माण करें। जब तक अर्थव्यवस्था को स्वस्थ नहीं बनाया जाएगा, समस्याएं पैदा होती रहेंगी। सत्ता एवं धन संग्रह दोनों भय का निर्माण करते हैं और जहां भय होता है वहां शस्त्रों का निर्माण भी अवश्य होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ में अणुव्रत के लोगों ने निरस्त्रीकरण की मांग रखी जिसका समर्थन अन्य लोगों ने भी किया। लोगों ने यहां तक भी कहा कि अणुबम का प्रतिपक्ष कोई बन सकता है तो वह अणुव्रत ही है।

उन्होंने अणुव्रत के लेखकों से आह्वान करते हुए कहा लेखक एक ऐसी शक्ति पैदा करें जो हिंसा व अनैतिकता के अंधकार को दूर करके नैतिकता के प्रकाश को फैलाएं। इससे पूर्व सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात पत्रकार व लेखक तथा पद्मश्री से सम्मानित मुजफ्फर हुसैन ने कहा कि एक मार्च 1949 वह दिन था जब गांधीजी की आत्मा बनकर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया। उन्होंने अणुव्रत को अंधेरे से उजाले की ओर, धूप से छाया की ओर तथा अनैतिकता से नैतिकता की ओर ले जाने वाला बताते हुए कहा कि छोटे-छोटे संकल्प छोटे होते हुए भी व्यक्ति को दुनिया मे महान बना सकते हैं, सिर्फ उनके क्रियान्वयन की आवश्यकता है। उन्होंने पंचशील संपूर्ण क्रांति, सर्वोदय और एकात्म मानववाद सभी को अणुव्रत आंदोलन का ही एक रूप बताया और कहा कि हिन्दुस्तान कभी भी नैतिकता के ऐसे आन्दोलन से खाली नहीं रहा। उन्होंने हिंसा और जनसंख्या की समस्या से दुःखी दुनिया में अणुव्रत की सीढ़ी को महत्त्वपूर्ण बताया तथा कहा कि स्वामी विवेकानन्द की तरह इस देश में आज आचार्य महाप्रज्ञ की आवाज गुंज रही हैं उन्होंने साहित्यकारों से कहा कि वे उठें और पत्रकारिता, साहित्य, भाषा हिन्दी के क्षेत्र में ऐसी नई रचना करे जिसका व्याकरण अणुव्रत बन जाए।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा लेखक के पास शब्द की शक्ति होती है और वे अपनी लेखन शक्ति को पुष्ट करें तो सहज ही हिंसा और अनैतिकता के अंधकार से मुक्ति मिल सकती है। उन्होंने महात्मा गांधी को भी एक जैन मुनि द्वारा इंग्लैण्ड जाते समय तीन व्रतों की शपथ दिलवाकर एक तरह से अणुव्रत रूपी सुरक्षा कवच प्रदान करने का उद्धरण प्रस्तुत किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि अणुव्रत को केवल संकल्प पत्र भरवाकर लागू नहीं किया जा सकता ये तो ऐसे व्रत हैं जिन्हें अपने स्वभाव का हिस्सा बनाया जाना आवश्यक है। यदि यह सम्भव हो गया तो अणुबम और भारत को महाशक्ति बनाने से भी एक बड़ा काम हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि सारे लेखक ये ठान लें कि कोई भी विपत्ति आने पर उनके कदम नहीं डिगेंगे तो समाज में सुधार अवश्य सम्भव है और यह देश संस्कारित होकर स्वर्ग बन जाएगा। इकराम राजस्थानी ने कहा कि लेखक किसी जाति या धर्म का नहीं होता वह तो मानव मात्र का होता है।

उन्होंने अणुव्रत को एक जुनून के रूप में लेकर कलम चलाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मानवता का प्रेम जगाने और लोगों का हृदय परिवर्तन करने में लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि डॉ. धर्मपाल मैनी ने अणुव्रतों को नैतिकता की आधार भूमि बताते हुए कहा कि इससे हमारा निर्माण होता है। आध्यात्मिक, नैतिकता व मूल्य परायण चेतना जाग्रत होती है। डॉ. मैनी ने अपनी पुस्तक मानव मूल्य व्याख्या कोश के छह खण्डों को आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित किया।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने काल के अनन्त प्रवाह के महत्व को बताते हुए कहा कि केवल महापुरुष ही काल की धारा को बदल सकते हैं।

कार्यक्रम मुनिश्री महावीर के मंगल संगान के साथ प्रारंभ हुआ। श्री विजयसिंह बरमेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। स्थानीय अणुव्रत समिति के महामंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अतिथियों का परिचय दिया। प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा, डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अतिथियों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया। संयोजन डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया। सम्मेलन का दूसरा परिचय सत्र मुनि सुखलाल के सान्निध्य एवं लेखक सुरेश पण्डित की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें सभी लेखकों ने अपना परिचय प्रस्तुत किया। सुरेश पण्डित ने कहा कि साहित्यकार या लेखक ने कभी कोई क्रांति नहीं की लेकिन वे क्रांति के जनक अवश्य बनते हैं क्योंकि उनके द्वारा तैयार माहौल समाज को बदलने की शक्ति रखता है। उन्होंने अणुव्रत के लिए रचनात्मक लेखन पर जोर दिया।